Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम — بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 32

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

15 ज़विल हज्जा 1441 हिजरी कमरी 6 ज़ुहूर 1399 हिजरी शमसी 6 अगस्त 2020 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَاۡکُلُوۡۤا اَمۡوَالَکُمۡ بَیۡنَکُمۡ بِالۡبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنۡ تَکُوۡنَ تِجَارَۃً عَنۡ تَرَاضٍ مِّنۡکُمۡ ۟ وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَنۡفُسَکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ کَانَ بِکُمۡ رَحِیۡمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

अल्लाह तआला ने इस की फ़ितरत ही में अपने लिए कुछ न कुछ रखा हुआ है और छुपे हुए माध्यमों से उसे अपने लिए बनाया है। इससे ज्ञात होता है कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारा जन्म का मूल उद्देश्य यह रखा है कि तुम अल्लाह तआला की उपासना करो परन्तु जो लोग अपनी इस असली और फ़ित्री उद्देश्य को छोड़कर हैवानों की तरह ज़िन्दगी व्यतीत करते हैं और उनकी ज़िन्दगी का उद्देश्य केवल खाना पीना और सोना हो जाता है। वे ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से दूर जा पड़ते हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्सानी जन्म का मूल उद्देश्य

सूर: अल-असर में अल्लाह तआला ने कुफ़्फ़ार और मोमिनों की ज़िन्दगी के उदाहरण बताए हैं कुफ़्फ़ार की ज़िन्दगी बिल्कुल जानवरों जैसी ज़िन्दगी होती है। जिनको खाने और पीने और तामसिक भावनाओं के अतिरिक्त और कोई काम नहीं होता। يَاۡكُلُوۡنَ كَمَا تَاۡكُلُ الۡاَنۡعَامُ (मुहम्मद:13) परन्तु देखो अगर एक बैल चारा तो खा ले लेकिन हल चलाने के समय बैठ जाए। उसका परिणाम क्या होगा? यही होगा कि ज़मींदार उसे बूचड़ख़ाने में जाकर बेच देगा। उसी तरह उन लोगों के बारे में (जो ख़ुदा तआला के आदेशों का अनुकरण या उसकी परवाह नहीं करते और अपनी ज़िन्दगी दुराचारा तथा कदचार में व्यतीत करते हैं) फ़रमाता है। قُلۡ مَا يَعۡبَؤُا بِكُمۡ رَبِّیۡ لَوۡلَا دُعَآؤُكُمۡ (अल-फ़ुर्क़ान:78) अर्थात मेरा रब तुम्हारी क्या परवाह करता है अगर तुम उसकी उपासना न करो। यह बात दिल की गहराई से याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला की इबादत के लिए मुहब्बत की ज़रूरत है और मुहब्बत दो प्रकार की होती है। एक मुहब्बत तो व्यक्तिगत होती है और एक उद्देश्यों से जुड़ी होती है अर्थात उसका कारण केवल कुछ अस्थायी बातें होती हैं जिन के दूर होते ही वह मुहब्बत ठण्डी हो कर दुख का कारण हो जाती है परन्तु ज़ाती मुहब्बत सच्ची राहत पैदा करती है। चूँकि इन्सान फ़ितरत से ख़ुदा ही के लिए पैदा हुआ। जैसा कि फ़रमाया مَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ (अज़्ज़ारियात: 57) इसलिए अल्लाह तआला ने उसकी फ़ितरत ही में अपने लिए कुछ न कुछ रखा हुआ है और छुपे हुए माध्यमों से उसे अपने लिए बनाया है। इससे ज्ञात होता है कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारे जन्म का मूल उद्देश्य यह रखा है कि तुम अल्लाह तआला की उपासना करो परन्तु जो लोग अपने इस वास्तविक और फ़ित्री उद्देश्य को छोड़कर हैवानों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं और उनकी ज़िन्दगी का उद्देश्य केवल खाना पीना और सोना हो जाता है। वे ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से दूर जा पड़ते हैं और ख़ुदा तआला की ज़िम्मेदारी उन के लिए नहीं रहती। वे ज़िन्दगी जो ज़िम्मेदारी की है। यही है कि مَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَ الۡاِنۡسَ اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ पर ईमान लाकर ज़िन्दगी का पहलू बदल ले। मौत का भरोसा नहीं है। सअदी रहमहुल्लहा का शेअर सच्चा है।

"मकन तक्या बर उमर नापायदार मबाश एयमन अज़ बाज़ी रोज़गार

नश्वर आयु पर भरोसा करना बुद्धिमानों का काम नहीं है। मौत यूं ही आकर लताड़ जाती है और इन्सान को पता भी नहीं लगता जब कि इन्सान इस तरह पर मौत के पंजा में गिरफ़्तार है। फिर उसकी ज़िन्दगी का ख़ुदा तआला के सिवा कौन ज़िम्मादार हो सकता है।

ख़ुदा के लिए ज़िन्दगी

अगर ज़िन्दगी ख़ुदा के लिए हो तो वह उसकी सुरक्षा करेगा। बुख़ारी में एक हदीस है कि जो आदमी ख़ुदा तआला से मुहब्बत का सम्बन्ध पैदा कर लेता है, ख़ुदा तआला उसके अंग हो जाता है। एक दूसरी रिवायत में है कि उसकी दोस्ती यहां तक होती है कि मैं उसके हाथ, पांव इत्यादि यहां तक कि इस की ज़बान हो जाता हूँ जिससे वह बोलता है। असल बात यह है कि जब इन्सान नफ़्स की भावनाओं से पाक हो जाता है और नफ़्सानियत छोड़कर ख़ुदा के इरादों के अन्दर चलता है। उस का कोई कर्म नाजायज़ नहीं होता बल्कि हर एक कर्म ख़ुदा की इच्छा के अनुसार होता है। इससे भी बढ़कर यह कि ख़ुदा तआला उसे अपना कर्म ही क़रार देता है। यह एक स्थान है क़ुर्ब-ए-इलाही का जहां पहुंच कर सुलूक की मंज़िलों को पूरे तौर पर तय न करने वालों ने या तो ठोकर खाई है या इलाहियात से अपरिचित और क़ुर्बे इलाही के अभिप्राय को न समझने वालों ने ग़लतफ़हमी से काम लिया है और वहदत वजूद का मसला घड़ लिया है। इस बात को भी हरगिज़ भूलना न चाहिए कि जहां इन्सान परीक्षा में पड़ता है वह कर्म ख़ुदा के इरादा से अनुसार नहीं होता। ख़ुदा तआला की इच्छा उसके विरुद्ध होती है। ऐसा आदमी अपनी भावनाओं के अधीन होता है न कि अल्लाह तआला की इच्छा के अधीन लेकिन वह इन्सान जो अल्लाह तआला का वली कहलाता है और ख़ुदा जिसकी ज़िन्दगी का ज़िम्मेदार होता है। वह, वह होता है जिसकी कोई हरकत तथा ठहराव अल्लाह की किताब के बिना नहीं होती। वह अपनी हर बात और इरादा पर अल्लाह की किताब की तरफ़ लौटता है और उससे परामर्श लेता है।

फिर आगे कहा है कि उसकी जान निकालने में अल्लाह तआला को बड़ा संकोच होता है। अल्लाह तआला संकोच से पाक है। अभिप्राय यह है कि एक मस्लिहत के कारण उस को मौत दी जाती है और एक महान मस्लिहत के लिए उसको दूसरे संसार में ले जाया जाता है। नहीं तो उसकी बक़ा ख़ुदा को बड़ी प्यारी लगती है। अत: अगर इन्सान का ऐसा जीवन नहीं कि ख़ुदा तआला को उसकी जान लेने में भी संकोच हो तो वह हैवानों से भी बुरा है। एक बकरी से बहुत से आदमी गुज़ारा कर सकते हैं और उसका चमड़ा भी काम आ सकता है। और इन्सान किसी हालत में क्या मर कर भी काम नहीं आता, परन्तु नेक आदमी का प्रभाव उसकी नस्ल पर भी पड़ता है और वह भी इससे लाभ उठाती है। वास्तविकता यह है कि असल में वह मरता ही नहीं, मरने पर भी इस को एक नया जीवन दिया जाता है। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने कहा है कि मैं बच्चा था, बूढ़ा हुआ। मैंने किसी ख़ुदा की इबादत करने वाले को अपमानित अवस्था में नहीं देखा और न उसके लड़कों को देखा कि वे टुकड़े मांगते हूँ, मानो मुत्तक़ी की औलाद का भी ख़ुदा तआला ज़िम्मेदार होता है बल्कि हदीस में आया है। ज़ालिम अपने परिवार वालों पर भी ज़ुलम करता है क्योंकि उन पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 167 से 170 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-14)

ख़लीफ़ा मुझे हक़ीक़त में पवित्र लगते हैं

अगर ऐसी शिक्षा मिले जिसका इज़हार आज इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर से हुआ है तो समाज में इन्सानी क़दरों का सम्मान स्थापित हो सकता है, चर्च को भी ऐसा नुक़्ता नज़र अपनाना होगा।

अभी चर्च बहुत से सवालों से आँखें चुराता है जब कि इमाम जमाअत अहमदिया ने हर संभावित सवाल और एतराज़ को लेकर कई दृष्टिकोणों से इस के उत्तर दिए और बे-ख़ौफ़ी के साथ दिए और इस्लाम के दृष्टिकोण की वज़ाहत की। ख़ुशी की बात यह है कि उनकी हर वज़ाहत और व्याख्या इन्सानी समाज को अमन, सुलह और मुहब्बत की तरफ़ ले जाने वाली है (एक स्थानीय हस्पताल के डाक्टर)

समस्त मुक़र्ररीन को सुना मगर जब इमाम जमाअत अहमदिया खड़े हुए तो एक और किस्म की कैफ़ीयत छा गई, आपकी आवाज़ और आपका लहजा सबसे अलग था जिसका मैं हर एक पर रुहानी प्रभाव महसूस हो रहा था और बड़े ग़ौर से आपका ख़िताब सुना, जो पैग़ाम आपने हमें दिया वह सिर्फ़ इस्लाम के बारे में नहीं था बल्कि सारी दुनिया के लिए एक बहुत अहम शिक्षा थी। (Dennis Merz साहिब)

मैं ने आज तक इतनी अच्छी तक़रीर नहीं सुनी, समस्त दृष्टिकोण जो इमाम जमाअत अहमदिया ने किए हैं

मैं उनसे सम्पूर्ण इत्तिफ़ाक़ रखता हूँ ,काश दुनिया के समस्त लीडर इस तरह की तक़ारीर करते तो आज दुनिया में अमन स्थापित होता

(कैथोलिक चर्च के एक पादरी)

ख़लीफ़ा मुझे हक़ीक़त में पवित्र लगते हैं और एक वास्तविक धार्मिक लीडर महसूस होते हैं

मेरे अंदर ख़लीफ़ा साहिब ने एक तब्दीली पैदा की है, जो कि उनकी विशेष पाकीज़गी के कारण से पैदा हुई है, उनके दिल से एक नूर निकलता हुआ महसूस होता है। जो प्रत्येक को अपने साथ जुड़ा करने वाला है ख़लीफ़ा एक वास्तविक रुहानी शख़्सियत महसूस होते हैं और में उन्हें बतौर पवित्र शख़्स स्वीकार कर सकती हूँ। Heike Ebel साहिबा वेज़ बादिन के एक स्कूल की टीचर

मस्जिद मह्दी (वेज़ बादिन,जर्मनी)के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

14 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजकर 55 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के साथ में खाना खाया। खाने के बाद कई मेहमानों ने बारी बारी अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पास आकर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर हर मेहमान से गुफ़्तगु फ़रमाते। मेहमानों ने तस्वीरें भी बनवाईं।

इस आयोजन के समापन पर जब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ स्टेज की सीढ़ियों से नीचे तशरीफ़ ला रहे थे तो आगे एक जर्मन औरत अपनी बच्ची के साथ हाथ में कैमरा लिए हुए खड़ी थी। वह अपनी बच्ची की हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाना चाहती थी। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए बच्ची को अपने पास बुलाया और कंधे पर हाथ रखा। औरत ने इस की तस्वीर बनाई जिस पर वह बेहद ख़ुश थी। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए इस औरत को भी तस्वीर बनवाने का सौभाग्य बख़्शा अत: माँ बेटी ने भी तस्वीर बनवाई

आज के इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों ने हाल के अंदर अपनी सीटों पर बैठे हुए, कइयों ने खड़े हो कर और कइयों ने स्टेज के सामने आकर बड़ी कसरत से हुज़ूर अनवर की तस्वीरें लीं। जिधर भी नज़र पड़ती थी कोई न कोई हुज़ूर अनवर की तस्वीर ले रहा था।

इस आयोजन के समापन पर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक दूसरे छोटे हाल में तशरीफ़ ले आए जहां मज्लिस आमला जमाअत वेज़ बादिन ने हुज़ूर अनवर के साथ एक ग्रुप फ़ोटो बनवाई। इस के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस हाल में तशरीफ़ ले आए। जहां इलैक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया के प्रतिनिधि मौजूद थे और हुज़ूर अनवर के आने की प्रतीक्षा में थे। आठ बजकर चालीस मिनट पर प्रैस कान्फ्रैंस का आरम्भ हुआ।

प्रैस कान्फ्रैंस वेज़ बादिन

एक पत्रकार ने सवाल किया कि यह आपका वेज़ बादिन का दूसरा दौरा है। मुझे नहीं मालूम आपने इस शहर की कितनी सैर की है, लेकिन आपको यह शहर कैसा लगा है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैंने इतनी सैर तो नहीं की लेकिन मस्जिद से आते हुए काफ़ी कुछ देखने को मिलता है। यह बहुत बड़ा और ख़ूबसूरत शहर है। मुझे यह अच्छा लगा है।

एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप भय और बदअमनी के ख़िलाफ़ बात करते आए हैं। लोगों के लिए आपका पैग़ाम किया है?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लोगों को तो मैं पैग़ाम दे चुका हूँ। मैंने अपनी तक़रीर में कहा था कि लोगों में इस्लाम और मुसलमानों के बारे में शंकाएं हैं और उसकी वजह कई मुसलमान गिरोहों के ग़लत क़दम हैं। लेकिन इस्लामी शिक्षा बहुत अमन वाली है और यह मासूम लोगों पर इस किस्म के अत्याचारों के ख़िलाफ़ है। इस्लाम हमें क़ानून हाथ में लेने की आज्ञा नहीं देता। हम एक अमन वाली जमाअत हैं और इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं पर चलने वाले हैं। तो मेरा पैग़ाम यही है कि इस शहर, क़स्बा या क्षेत्र के लोगों को बिलकुल घबराने की ज़रूरत नहीं है। उनके दिलों में अहमदी मुसलमानों के हवाला से कोई शंकाएं नहीं होनी चाहिऐं। हम एक अमन वाली जमाअत हैं और हम इसलिए अमन वाले हैं कि हम वास्तविक इस्लामी शिक्षा पर अनुकरण करते हैं।

एक प्रतिनिधि ने सवाल किया कि मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपकी तक़रीर खासतौर पर जर्मन लोगों के लिए थी क्योंकि इस देश में बहुत सी ऐसी घटनाएं हो रही हैं। पिछले सप्ताह एक शख़्स ने यहूदी माबद पर हमला की कोशिश की थी। क्या आपने अपनी तक़रीर में खासतौर पर जर्मन लोगों को सम्मुख रखा है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नहीं ऐसा नहीं है। मैंने तक़रीर के लिए कोई विशेष तैय्यारी नहीं की थी। मैंने तो

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे अल्लाह के रसूल हम आपके आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे ,आपके दाएं भी लड़ेंगे बाएं भी लड़ेंगे और दुश्मन आप तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि वे हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के एक निहायत जान कुरबान करने वाले आशिक़, निहायत दर्जा के मुख़लिस, नेक, निस्सवार्थ, फ़िदाई, वफ़ादार और क़बीला औस के सबसे बड़े रईस

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया 'हे अल्लाह अन्सार पर रहम फ़र्मा और अन्सार के बेटों पर रहम फ़र्मा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 जुलाई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बों से हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का वर्णन चल रहा था। जंग बदर में वफ़ा के वादा के इज़हार की एक घटना जिसका पिछले ख़ुत्बा में भी वर्णन हुआ था उसे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने भी अपने अंदाज़ में वर्णन फ़रमाया है। आप इस तरह फरमाते हैं कि

''यह एक क़ुदरती बात है कि जहां इशक़ होता है वहां कोई आदमी भी नहीं चाहता कि मेरे महबूब को कोई कष्ट पहुंचे और कोई भी यह पसंद नहीं करता कि उसका महबूब लड़ाई में जाए बल्कि हर संभव कोशिश की जाती है कि महबूब लड़ाई से बच जाए। इसी तरह सहाबा रज़ि भी इस बात को पसन्द नहीं करते थे कि आप लड़ाई पर जाएं।" सहाबा रज़ि इस बात को नापसंद नहीं करते कि हम लड़ाई पर क्यों जाएं बल्कि उनको रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लड़ाई पर जाना नापसंद था और यह उनकी कुदरती इच्छा थी जो हर मुहिब (प्रेमी) को अपने महबूब के साथ होती है। इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि इतिहास से इस बात के बहुत प्रमाण मिलते हैं कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के निकट पहुंचे तो आपने सहाबा रज़ि से फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे ख़बर दी है कि हमारा मुक़ाबला क़ाफ़ला से नहीं बल्कि फ़ौज के साथ होगा। फिर आपने उनसे मश्वरा लिया और फ़रमाया कि बताओ तुम्हारा क्या परामर्श है? जब बड़े सहाबा रज़ि ने आप की यह बात सुनी तो उन्होंने बारी-बारी उठ उठ कर निहायत जान कुर्बान करने वाली तक़रीरें कीं और निवेदन किया हम हर सेवा के लिए हाज़िर हैं। एक उठता और तक़रीर करके बैठ जाता। फिर दूसरा उठता और मश्वरा देकर बैठ जाता। अत: जितने भी उठे उन्होंने यही कहा कि अगर हमारा ख़ुदा हमें हुक्म देता है तो हम ज़रूर लड़ेंगे परन्तु जब कोई मश्वरा देकर बैठ जाता तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते मुझे मश्वरा दो और इसका कारण यह था कि अभी तक जितने सहाबा रज़ि ने उठ उठकर तक़रीरें की थीं और मश्वरे दिए थे वे सब मुहाजरीन में से थे परन्तु जब आपने बार-बार यही फ़रमाया कि मुझे मश्वरा दिया जाए तो सअद बिन मुआज़ रज़ि रईस औस ने आप की इच्छा समझी और अन्सार की तरफ़ से खड़े हो कर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! आप की सेवा में मश्वरा तो दिया जा रहा है परन्तु आप फिर भी यही फ़रमाते हैं कि मुझे मश्वरा दो। इससे मालूम होता है कि आप अन्सार की राय पूछना चाहते हैं। इस समय तक अगर हम ख़ामोश थे तो सिर्फ इसलिए कि अगर हम लड़ने का समर्थन करेंगे तो शायद मुहाजरीन ये समझें कि ये लोग हमारी क़ौम और हमारे भाइयों से लड़ना और उनको क़त्ल करना चाहते हैं। फिर उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल! शायद आप का बैअत उक़बा के इस मुआहिदा के बारे में कुछ ख़्याल है जिसमें हमारी तरफ़ से यह शर्त पेश की गई थी कि अगर दुश्मन मदीना पर हमला करेगा तो हम उसकी रक्षा करेंगे लेकिन अगर मदीना से बाहर जा कर लड़ना पड़ा तो हम उसके ज़िम्मेदार नहीं होंगे। आपने फ़रमाया हाँ। सअद बिन मुआज़ रज़ि ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! इस समय जबकि हम आपको मदीना लाए थे हमें आपके उच्च स्थान और मर्तबा का ज्ञान नहीं था। अब तो हमने अपनी आँखों से आप की हक़ीक़त को देख लिया है। अब इस मुआहिदे की हमारी नज़रों में कुछ भी हैसियत नहीं है अर्थात जो बैअत उक़बा के समय मुआहिदा हुआ था वह तो दुनियावी दृष्टि से एक साधारण मुआहिदा था। अब जो हमने देखा है और इसके बाद हमारी रूहानियत की जो आँखें खुली हैं तो इसकी कुछ भी हक़ीक़त नहीं है। ''इसलिए आप जहां चाहें चलें हम आपके साथ हैं और ख़ुदा क़सम! अगर आप हमें समुंद्र में कूद जाने का हुक्म दें तो हम कूद जाऐंगे और हम में से एक आदमी भी पीछे नहीं रहेगा। हे अल्लाह के रसूल हम आपके आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे। आपके दाएं भी लड़ेंगे और बाएं भी लड़ेंगे और दुश्मन आप तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि वे हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे।

(एक आयत की पुर मआरिफ़ तफ़सीर , अन्वारुल उलूम भाग18 पृष्ठ 620-621)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सूरह रअद की आयत 12 जो इस तरह शुरू होती है कि لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ (अर्राद 12) अर्थात उसके लिए उसके आगे और पीछे चलने वाले मुहाफ़िज़ निर्धारित हैं। इसकी तफ़सीर फरमाते हैं कि

''रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त नबुव्वत का युग इस सुरक्षा का सबूत देता है।' जो अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था। आगे और पीछे हम ने मुहाफ़िज़ निर्धारित किए हुए हैं। ''अत: मक्का में आप की सुरक्षा फ़रिश्ते ही करते थे वर्ना इतने दुश्मनों में घिरे हुए रह कर आप की जान किस तरह सुरिक्षत रह सकती थी। हाँ मदीना तशरीफ़ लाने पर दोनों किस्म की सुरक्षा आपको प्राप्त हुई। आसमानी फ़रिश्तों की भी और ज़मीनी फ़रिश्तों अर्थात सहाबा रज़ि की भी। बदर की जंग इस ज़ाहिरी और भीतरी सुरक्षा का एक बहुत ही उत्तम उदाहरण है। हुज़ूर जब मदीना तशरीफ़ ले गए थे तो आपने मदीना वालों से मुआहिदा किया था कि अगर आप मदीना से बाहर जा कर लड़ेंगे तो मदीना वाले आप का साथ देने पर मजबूर न होंगे। बदर की लड़ाई में आपने अन्सार और मुहाजरीन से लड़ने के बारे में मश्वरा फ़रमाया। मुहाजरीन बार-बार आगे बढ़कर मुक़ाबला करने पर-ज़ोर देते थे लेकिन हुज़ूर उनकी बात सुनकर फिर फ़र्मा देते कि हे लोगो मश्वरा दो। जिस पर एक अन्सारी (सअद बिन मुआज़ रज़ि ने कहा क्या हज़ूर का अभिप्राय हमसे है? हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ। उसने कहा कि बेशक हमने हुज़ूर से मुआहिदा किया था कि अगर बाहर जा कर लड़ने का मौक़ा होगा तो हम हुज़ूर का साथ देने पर विवश न होंगे लेकिन वह समय और था जबकि हमने देख लिया...' अब ''जबकि हमने देख लिया कि आप ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं तो अब इस मश्वरा की क्या ज़रूरत है। अगर हुज़ूर हमें हुक्म दें तो हम अपने घोड़े समुंद्र में डाल देंगे। हम मूसा के साथियों की तरह यह नहीं कहेंगे कि तू और तेरा रब जा कर लड़ो ,हम यहां बैठे हैं। बल्कि हम हुज़ूर के दाएं बाएं, आगे और पीछे लड़ेंगे और दुश्मन

आप तक हरगिज़ न पहुंच सकेगा जब तक वह हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे।' आप फ़रमाते हैं कि "यह मुख़लसीन भी मेरे नज़दीक इन मुअक्काबात में से थे।' अर्थात उन मुहाफ़िज़ों में से थे "जो ख़ुदा तआला ने हुज़ूर की सुरक्षा के लिए निर्धारित फ़र्मा दिए थे। एक सहाबी कहते हैं कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ तेरह जंगों में शामिल हुआ हूँ परन्तु मेरे दिल में कई बार यह इच्छा पैदा हुई है कि मैं बजाय उन लड़ाईयों में हिस्सा लेने के इस वाक्य का कहने वाला होता जो सअद बिन मुआज़ रज़ि के मुँह से निकला था।' (तफ़सीर कबीर भाग 03 पृष्ठ 392) अर्थात कि अपने अहदे वफ़ा का वाक्य।

जंग बदर के अवसर पर हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के इख़लास का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने तहरीर फ़रमाया है कि

"जिस जगह इस्लामी लश्कर ने डेरा डाला था वह कोई ऐसी अच्छी जगह नही थी।" जंग की दृष्टि से। "इस पर हुबाब बिन मुनज़िर रज़ि ने आप से पूछा कि क्या ख़ुदाई इलहामों के अधीन आपने यह स्थान पसन्द की है या केवल फ़ौजी योजना के तौर पर इसे धारण किया है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस बारे में कोई ख़ुदा तआला का आदेश नहीं है। तुम कोई मश्वरा देना चाहते हो तो बताओ। हुबाब ने निवेदन किया तो फिर मेरे विचार में यह जगह अच्छी नहीं है।' जंग की दृष्टि से। "बेहतर होगा कि आगे बढ़कर क़ुरैश से क़रीब तरीन चश्मा पर क़बज़ा कर लिया जाए। मैं उस चश्मा को जानता हूँ। उसका पानी अच्छा है और प्राय होता भी काफ़ी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस परामर्श को पसन्द फ़रमाया और चूँकि अभी तक क़ुरैश टीला के दूसरी तरफ डेरा डाले पड़े थे और यह चश्मा ख़ाली था मुसलमान आगे बढ़कर इस चश्मा पर क़ाबिज़ हो गए लेकिन जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में इशारा पाया जाता है उस समय उस चश्मा में भी पानी ज़्यादा नहीं था और मुसलमानों को पानी की कमी महसूस होती थी। फिर यह भी था कि वादी के जिस तरफ़ मुसलमान थे वह ऐसी अच्छी न थी क्योंकि इस तरफ़ रेत बहुत थी जिसकी वजह से पांव अच्छी तरह जमते नहीं थे।

जगह के चुनाव के बाद सअद बिन मुआज़ रज़ि रईस ओस के परामर्श से सहाब रज़ि ने मैदान के एक हिस्सा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक साएबान जैसा तैयार कर दिया और सअद रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी साएबान के पास बांध कर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल आप इस साएबान में तशरीफ़ रखें और हम अल्लाह का नाम लेकर दुश्मन का मुक़ाबला करते हैं। अगर ख़ुदा ने हमें फ़तह दी तो यही हमारी इच्छा है' तो अल्हमदो लिल्लाह। "लेकिन अगर ख़ुदा न करे-मामला इसके विपरीत हुआ तो आप अपनी सवारी पर सवार हो कर जिस तरह भी हो मदीना पहुंच जाएं।' इस ख़ेमा के साथ ही अच्छी किस्म की सवारी, एक ऊंट भी बांध कर रख दिया। फिर उन्होंने निवेदन किया कि आप वहां मदीना पहुंच जाएं । "वहां हमारे ऐसे भाई मौजूद हैं जो मुहब्बत तथा इख़लास में हमसे कम नहीं हैं लेकिन चूँकि उनको यह विचार नहीं था कि इस मुहिम में जंग पेश आ जाएगी इसलिए वे हमारे साथ नहीं आए वर्ना हरगिज़ पीछे न रहते लेकिन जब उन्हें हालात का ज्ञान होगा तो वे आप की सुरक्षा में जान तक लड़ा देने से पीछे नहीं हटेंगे। यह सअद का जोश तथा इख़लास था जो हर अवस्था में प्रशंसा के योग्य है वर्ना भला ख़ुदा का रसूल और मैदान से भागे!' आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जंगों में सबसे आगे होते थे। "अत: हुनैन के मैदान में' हम देखते हैं कि "बारह हज़ार फ़ौज ने पीठ दिखाई परन्तु यह तौहीद का मर्कज़ अपनी जगह से पीछे नहीं हटा। बहरहाल साएबान तैयार किया गया' जैसा कि सअद रज़ि ने कहा था "और सअद रज़ि और कुछ दूसरे अन्सार उसके आसपास पहरा देने के लिए खड़े हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि ने इसी साएबान में रात व्यतीत की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रात-भर ख़ुदा के हुज़ूर व्याकुलता से दुआएं कीं और लिखा है कि सारे लश्कर में सिर्फ आप ही थे जो रात-भर जागे। बाक़ी सब लोग बारी बारी अपनी नींद सो लिए। '

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 356-357)

जंग उहद के अवसर पर जुम्मा की रात हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि , हज़रत उसैद बिन हुज़ीर रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि मस्जिद नबवी में हथियार पहने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर पहरा देते रहे। जंग उहद के अवसर पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घोड़े पर सवार हो कर और कमान कंधे पर डाल कर और नेज़ा हाथ में लेकर मदीना से रवाना हुए तो दोनों सअद रज़ि अर्थात हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि आपके आगे आगे दौड़ रहे थे। इन दोनों ने ज़िरह पहनी हुई थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले-इब्न सअद भाग 2 पृष्ठ 28 से 30 ग़ज़वा रसूलुल्लाह, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि जंग उहद का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि

आप सहाबा रज़ि की एक बड़ी जमाअत के साथ असर की नमाज़ के बाद मदीना से निकले। क़बीला ओस और ख़ज़रज के रईस सअद बिन मुआज़ रज़ि और सअद बिन उबादा रज़ि आप की सवारी के सामने धीरे-धीरे दौड़ते जाते थे और बाक़ी सहाबा रज़ि आपके दाएं और बाएं और पीछे चल रहे थे।'

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 486)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग उहद से मदीना वापिस आए और अपने घोड़े से उतरे तो आप हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि का सहारा लेते हुए अपने घर में दाख़िल हुए।

(सब्बुलुल हुदा वर्रशाद भाग 4 पृष्ठ 229 बाब ग़ज़वा उहद ज़िक्र रहील रसूलुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की मां को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कितनी मुहब्बत थी उसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि जंग उहद से वापसी पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी की रस्सी हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि पकड़े हुए गर्व से चल रहे थे। जंग में आप का भाई भी मारा गया था। मदीना के क़रीब पहुंच कर हज़रत सअद रज़ि ने अपनी माँ को आते हुए देखा और कहा हे अल्लाह के रसूल मेरी माँ आ रही है। हज़रत सअद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की माता की उम्र उस समय कोई 82 साल की थी। आँखों का नूर जा चुका था। बहुत कमज़ोर नज़र थी। धूप छाओं मुश्किल से नज़र आती थी। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शहीद होने की ख़बर सुनकर, मदीना में यह मशहूर हो गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया गया है तो यह ख़बर सुनकर वह बुढ़िया भी लड़खड़ाती हुई मदीना से बाहर निकली जा रही थी। हज़रत सअद रज़ि ने कहा हे अल्लाह के रसूल मेरी माँ आरही है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़रीब पहुंचे तो आपने फ़रमाया मेरी सवारी को ठहरा लो। तुम्हारी माँ आ रही है वहां उसके क़रीब मेरी सवारी को खड़ा कर दो। जब आप उस बूढ़ी औरत के क़रीब आए तो उसने अपने बेटों के बारे में कोई ख़बर नहीं

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पूछी। पूछा तो यह पूछा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहाँ हैं? हज़रत सअद रज़ि ने जवाब दिया आपके सामने हैं। इस बूढ़ी औरत ने ऊपर नज़र उठाई और इसकी कमज़ोर निगाहें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे पर फैल कर रह गईं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बी-बी मुझे अफ़सोस है तुम्हारा जवान बेटा इस जंग में शहीद हो गया है। बुढ़ापे में कोई शख़्स ऐसी ख़बर सुनता है तो उसके होश उड़ जाते हैं लेकिन इस बुढ़िया ने कैसा मुहब्बत भरा जवाब दिया कि हे अल्लाह के रसूल आप कैसी बातें कर रहे हैं। मुझे तो आप की ख़ैरीयत की फ़िक्र थी

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने यह हटना वर्णन की उसके बाद आपने अहमदी औरतों से सम्बोधित हो कर तब्लीग़ के फर्ज़ को ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि यही वह औरतें थीं जो इस्लाम की इशाअत और तब्लीग़ में मर्दों के कंधा के साथ कंधा मिला कर चलती थीं और यही वे औरतें थीं जिनकी क़ुर्बानियों पर इस्लामी दुनिया गर्व करती है। तुम्हारा भी दावा है, आजकल जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाली औरतें हैं, तुम्हारा भी यह दावा है कि तुम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाई हो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप हैं। मानो दूसरे शब्दों में तुम सहाबियात की प्रतिरूप हो लेकिन तुम सही तौर पर बताओ कि क्या तुम्हारे अन्दर धर्म की वही भवना भरी है जो सहाबियात में थी? क्या तुम्हारे अन्दर वही नूर मौजूद है जो सहाबियात में था? क्या तुम्हारी औलादें वैसी ही नेक हैं जैसी सहाबियात की थीं? अगर तुम ग़ौर करोगी तो तुम अपने आपको सहाबियात से बहुत पीछे पाओगी। सहाबियात ने तो जो क़ुर्बानियां कीं आज तक दुनिया के पर्दे पर इसका उदाहरण नहीं मिलता। उनकी क़ुर्बानियां जो उन्होंने अपनी जान पर खेल कर कीं अल्लाह तआला को ऐसी प्यारी लगीं कि अल्लाह तआला ने बहुत शीघ्र उनको सफलता प्रदान की और दूसरी कौमें जिस काम को सदियों में न कर सकीं उनको सहाबा और सहाबियात ने कुछ सालों के अंदर करके दिखा दिया।

(उद्धरित फ़रीज़ा तब्लीग़ और अहमदी ख़वातीन, अन्वारुल उलूम भाग18 पृष्ठ 400-401)

यहां क्योंकि सम्बोधित आप अहमदी औरतों से थे इसलिए उनका वर्णन है वर्ना कई स्थानों पर पर हमेशा खलुफ़ा यह कहते आए हैं, मैं भी कई बार कह चुका हूँ कि हमारे मर्दों को भी वही उदाहरण दिखाने पड़ेंगे तभी हम जो दावा करते हैं और जो इस दावा को लेकर उठे हैं कि दुनिया में इस्लाम का पैग़ाम फैलाना है और दुनिया को इस्लाम के झंडे तले लेकर आना है इस पर अनुकरण कर सकते हैं। जब हमारी क़ुर्बानियां और हमारे अनुकरण उसके अनुसार होंगे जिसके उदाहरण सहाबा रज़ि ने हमारे सामने क़ायम फ़रमाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

''ईसाई दुनिया मर्यम मगदलेनी और उसकी साथी औरतों की इस बहादुरी पर ख़ुश है कि वे मसीह की क़ब्र पर सुबह के समय दुश्मनों से छुप कर पहुंची थीं। मैं उनसे कहता हूँ आओ और ज़रा मेरे महबूब के मुख़्लिसों और फ़िदाइयों को देखो कि किन हालतों में उन्होंने उसका साथ दिया और किन हालतों में उन्होंने तौहीद के झंडे को बुलंद किया। इस किस्म की फ़दाईत का एक और उदाहरण भी तारीख़ में मिलती है जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुहदा को दफ़न करके मदीना वापिस गए।' फिर एक और अवसर पर दोबारा हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की माता का यही उदाहरण दे रहे हैं कि शहीदों को दफ़न करके जब मदीना वापस गए। ''तो फिर औरतें और बच्चे शहर से बाहर स्वागत के लिए निकल आए। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की रस्सी सअद बिन मुआज़ रज़ि मदीना के रईस ने पकड़ी हुई थी और गर्व से आगे आगे दौड़े जाते थे। शायद दुनिया को यह कह रहे थे कि देखा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ैरीयत से अपने घर वापस ले आए। शहर के पास उन्हें अपनी बुढ़िया माँ जिसकी नज़र कमज़ोर हो चुकी थी आती हुई मिली। उहद में उसका एक बेटा अमरो बिन मुआज़ रज़ि भी मारा गया था। उसे देखकर सअद बिन मुआज़ रज़ि ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरी मां हे अल्लाह के रसूल मेरी माँ आ रही है। आपने फ़रमाया ख़ुदा तआला की बरकतों के साथ आए। बुढ़िया आगे बढ़ी और अपनी कमज़ोर फटी आँखों से इधर उधर देखा कि कहीं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक्ल नज़र आ जाए। आख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा पहचान लिया और ख़ुश हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया माई! मुझे तुम्हारे बेटे की शहादत पर तुमसे हमदर्दी है। इस पर नेक औरत ने कहा हुज़ूर जब मैंने आपको सलामत देख लिया तो समझो कि मैंने मुसीबत को भून कर खा लिया। ''मुसीबत को भून कर खा लिया ''क्या अजीब मुहावरा है। मुहब्बत की कितनी गहरी भावनाओं पर आधारित है। ग़म इंसान को खा जाता है। वह औरत जिसके बुढ़ापे में उसका बुढ़ापे का सहारा टूट गया किस बहादुरी से कहती है कि मेरे बेटे के ग़म ने मुझे क्या खाना है जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं तो मैं इस ग़म को खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मौत मुझे मारने का कारण नहीं होगी बल्कि यह ख़्याल कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उसने जान दी।' यह ख़्याल तो ''मेरी क़ुव्वत के बढ़ाने का कारण होगा मेरी ताक़त को बढ़ाने का कारण होगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद अन्सार की प्रशंसा करते हुए और उनको दुआ देते हुए फ़रमाते हैं। "हे अन्सार मेरी जान तुम पर फ़िदा हो। तुम कितना सवाब ले गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 256-257)

काब बिन अशर्फ़ को उसके उपद्रव, इस्लाम के ख़िलाफ़ द्वेष और दुश्मनी फैलाने यहां तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़त्ल की साज़िश करने पर जो क़तल की सज़ा का फ़ैसला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था इसमें भी बहैसीयत सरदार क़बीला अन्सार के, सरदार क़बीला के तौर पर हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के मश्वरे को भी शामिल किया गया था। इसके विस्तार अर्थात इस सज़ा के अमल होने और काब बिन अशर्फ़ के क़त्ल का यह विस्तार जो है वह मैं कुछ अरसा पहले दो सहाबा के ज़िक्र में वर्णन कर चुका हूँ (जुम्अ: 7 दिसम्बर 2018 ई प्रकाशन अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 28 दिसम्बर 2018 ई और ख़ुतबा जुम्अ 7 फरवरी 2020 ई प्रकाशन अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 28 फरवरी 2020 ई परन्तु उसका कुछ हिस्सा यहां भी वर्णन करता हूँ जिसका सम्बन्ध हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि से है। और यह जो मैं वर्णन करूँगा इसमें भी कुछ उद्धरित किया है और कुछ उद्धरण मैंने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन से ही लिया है

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में हिजरत करके तशरीफ़ लाए तो कअब बिन अशरफ दूसरे यहूदियों के साथ मिलकर इस सन्धि में शामिल हुआ की जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और यहूद के मध्य आपसी दोस्ती और अमन तथा शान्ति और साझी प्रतिरक्षा के बारे में लिखा गया था परन्तु अंदर ही अंदर कअब के दिल में द्वैष की आग सुलगने लग गई और उस ने खुफ़िया चालों और खुफ़िया कामों से इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक का विरोध शुरू कर दी।

कअब का विरोध ज़्यादा ख़तरनाक रूप धारण कर गया। अपने विरोध और फ़ित्ना फैलाने में बढ़ता ही चला गया और अन्त में जंग बदर के बाद तो उसने ऐसा व्यवहार धारण किया जो सख़्त उप्रदव फैलाने वाला और फ़ित्ना फैलाने वाला था और जिस के नतीजा में मुसलमानों के लिए निहायत ख़तरनाक हालात पैदा हो गए। अत: लिखा है कि कअब प्रत्येक वर्ष यहूदी उल्मा तथा बुज़ुर्गों को बहुत सी ख़ैरात दिया करता था। उसने एक दिन उन बुज़ुर्गों से उनकी मज़हबी किताबों की

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

दृष्टि से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में सवाल किया कि तुम्हारा क्या ख़्याल है यह सच्चा है कि नहीं? उन्होंने कहा कि बज़ाहिर तो यह वही नबी मालूम होता है जिसका हमें वादा दिया गया था, हमारी शिक्षा में वर्णन है। कअब तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और इस्लाम का बड़ा सख़्त विरोधी था। इस जवाब पर वह बहुत बिगड़ गया और उनको सख़्त सुस्त कह कर, बुरा-भला कह कर वहां से विदा कर दिया और जो ख़ैरात उन्हें दिया करता था वह भी न दी। जब ख़ैरात बन्द हो गई, जो उनका वज़ीफ़ा जारी था वह बन्द हो गया तो कुछ समय बाद उन्होंने कअब के पास जा कर कहा कि हमने दोबारा ग़ौर किया है। पैसे को तो मौलवी आज भी नहीं छोड़ता यही हाल उनका था। उन्होंने कहा जी हमने दोबारा ग़ौर किया है दरअसल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह नबी नहीं हैं जिसका वादा दिया गया था। इस पर उसने ख़ुश हो कर उनका वज़ीफ़ा दोबारा जारी कर दिया। वह जो ख़ैरात देता था दे दी।

बहरहाल यह तो मामूली बात थी कि यहूदी उल्मा को अपने साथ मिला लिया लेकिन ख़तरनाक बात जो थी वह यह थी कि जंग बदर के बाद उसने ऐसा व्यवहार किया जो सख़्त उप्रदव फैलाने वाला और फ़ित्ना फैलाने वाला था और जिसके नतीजा में मुसलमानों के लिए निहायत ख़तरनाक हालात पैदा हो गए थे। जब बदर के अवसर पर मुसलमानों को एक ग़ैरमामूली विजय प्राप्त हुई और क़ुरैश के अधिकतर रईस मारे गए तो उसने समझ लिया कि अब यह नया धर्म यूं ही मिटता नज़र नहीं आता। पहले तो ख़्याल था यह नया धर्म है ख़त्म हो जाएगा। ख़ुद ही अपनी मौत मर जाएगा लेकिन जब इस्लाम की तरक़्क़ी देखी, बदर के जंग के परिणाम देखे तो फिर उसको विचार पैदा हुआ कि यह इस तरह नहीं मिटेगा। अत: बदर के बाद उसने अपनी पूरी कोशिश इस्लाम के मिटाने और तबाह तथा बर्बाद करने में खर्च कर देने का इरादा कर लिया।

जब कअब को यह यक़ीन हो गया कि वास्तव में बदर की फ़तह ने इस्लाम को वह दृढ़ता प्रदान कर दी है जिसकी उसे कल्पना भी न थी तो वह क्रोध तथा से भर गया और तुरन्त सफ़र की तैयारी करके उसने मक्का की राह ली और वहां जाकर अपनी चर्ब ज़बानी और शेअर कहने के ज़ोर से क़ुरैश के दिलों की सुलगती हुई आग को भड़कने वाला शोला बना दिया, भड़का दिया और उन के दिलों में मुसलमानों के ख़ून की न बुझने वाली प्यास पैदा कर दी और उन के सीने बदला के भावना से भर दिए। और जब कअब के जोश दिलाने से उनकी भावनाओं में एक बहुत अधिक स्तर की बिजली पैदा हो गई तो उसने उनको ख़ाना काअबा के सेहन में ले जा कर और काबा के पर्दे उनके हाथों में दे देकर उनसे क़समें लीं कि जब तक इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को दुनिया से समाप्त न कर देंगे उस समय तक चैन नहीं लेंगे।

मक्का में यह आग पैदा करने के बाद उसने यहीं पर बस न की बल्कि इस बद-बख़्त ने दूसरे अरब क़बीलों का रुख किया और एक कबीला से दूसरे कबीला में फिर कर मुसलमानों के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया। और फिर मदीना में वापस आकर अपनी इस्लाम विरोधी काम तेज़ कर दिए। और ग़ैर मुस्लिमों में अपने दिलाने वाले शेरों में और विशेष रूप से यहूदियों में भी गन्दे और निर्लज्जता पूर्वक तरीक़ा पर मुसलमान औरतों का वर्णन किया। और केवल यहां तक नहीं किया बल्कि अन्त में उसने यह भी कोशिश की बल्कि साज़िश की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल किया जाए और आपको किसी दावत के बहाने से अपने मकान पर उसने बुलाया और कुछ नौजवान यहूदियों से आपके क़तल करवाने का मन्सूबा बाँधा। ख़ुदा के फ़ज़ल से समय पर सूचना हो गई। आपको ख़ुदा तआला ने सूचना दे दी और इसकी साज़िश सफल नहीं हुई। जब अवस्था यहां तक पहुंच गई और कअब के ख़िलाफ़ जो मुआहिदा किया हुआ था उसकी अह्द शिकनी और जो हुकूमत क़ायम थी उसके ख़िलाफ़ बग़ावत, तहरीक जंग, फ़ित्ना फैलाने, निर्लज्जता और कतल की साज़िश के आरोप के सबूत मिल गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो इस सारी क़ौमों के मुआहिदा की दृष्टि से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना में तशरीफ़ लाने के बाद मदीना के लोगों में हुआ था ,मदीना की जमहूरी सल्तनत के आप सदर और सबसे बड़े हाकिम थे,आपने यह फ़ैसला फ़रमाया दिया कि कअब बिन अशर्फ़ अपनी कार्यवाईयों की वजह से क़त्ल के योग्य है और आपने कुछ सहाबा को इरशाद फ़रमाया कि उसे क़त्ल कर दिया जाए। कुछ हालतों और हिक्मत की मांग के अधीन आपने यह हिदायत फ़रमाई कि कअब को सबके सामने क़तल न किया जाए बल्कि कुछ लोग ख़ामोशी के साथ कोई उचित अवसर निकाल कर उसे क़तल कर दें और यह डयूटी आपने क़बीला औस के एक मुख़्लिस सहाबी मुहम्मद बिन मसलमा के सपुर्द फ़रमाई और उन्हें ताकीद फ़रमाई कि जो तरीक़ा भी धारण करो क़बीला औस के रईस जो सअद बिन मुआज़ रज़ि हैं उनसे ज़रूर मश्वरा करें। अत: मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने सअद बिन मुआज़ रज़ि के मश्वरा से अब्बू नाइला और दो तीन और सहाबियों को अपने साथ लिया और कअब के क़त्ल की सज़ा को व्यावहारिक रूप पहनाया। इसकी जो भी हिक्मत थी या क़तल का तरीक़ा धारण किया गया था उसका विस्तार जैसा कि मैंने कहा है मैं पहले कुछ सहाबा के ज़िक्र में वर्णन कर आया हूँ।

(ख़ुत्बा जुमा 7 दिसम्बर 2018 ई प्रकाशन अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 28 दिसम्ब 2018 ई और ख़ुत्बा जुमा 7 फरवरी 2020 ई प्रकासन अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 28 फरवरी 2020 ई)

बहरहाल जो हिक्मत धारण की गई थी उसके अधीन उसको रात के समय घर से निकाल कर क़त्ल किया गया था। उसके क़त्ल की ख़बर जो मशहूर हुई तो सुबह के समय शहर में एक सनसनी फैल गई और यहूदी लोग सख़्त जोश में आ गए। और दूसरे दिन सुबह के समय यहूदियों का एक वफ़द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि हमारा सरदार कअब बिन अशर्फ़ इस तरह क़त्ल कर दिया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी बातें सुनकर फ़रमाया क्या तुम्हें यह पता नहीं कि कअब किस-किस जुर्म का करने वाला है? क़त्ल हुआ है हाँ ठीक है लेकिन उसके जुर्म थे जिसकी सज़ा उसको मिली है। फिर आपने संक्षिप्त रूप से उनको कअब के वादा तोड़ने और तहरीक जंग और फ़ित्ना फैलाने और निर्लज्जता और क़तल की साज़िश इत्यादि की कार्यवाहियां याद करवाईं जिस पर ये लोग डर कर ख़ामोश हो गए। उन्हें, सबको पता था कि ये सब कुछ यह करता रहा है। उसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम्हें चाहिए कम से कम भविष्य के लिए अमन और सहयोग के साथ रहो और शत्रुता और फ़ित्ना तथा फ़सअद का बीज न बोओ। अत: यहूद की रजामंदी के साथ भविष्य के लिए एक नया मुआहिदा लिखा गया और यहूद ने मुसलमानों के साथ अमन तथा शान्ति के साथ रहने और फ़ित्ना तथा उप्रदव के तरीक़ों से बचने का पुन: वादा किया और यह नया मुआहिदा लिखा गया। तारीख़ में किसी जगह भी वर्णित नहीं है कि इसके बाद यहूदियों ने कभी कअब बिन अशर्फ़ के क़त्ल का वर्णन करके मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाया हो क्योंकि उनके दिल महसूस करते थे कि कअब अपनी सज़ा को पाने के योग्य है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 467 से 471)

यह सज़ा थी जो उसे दी गई और न आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसका इन्कार किया कि हमने नहीं किया, हमें पता नहीं , बल्कि सारा कुछ गँवाया और ज़ाहिर था यह आप का फ़ैसला था। आप हुकूमत के प्रमुख थे और इसमें दो सरदार जो मदीना के रईस थे उनकी राय भी शामिल थी जो मुसलमान थे सअद बिन मुआज़ इत्यादि।

यहूदी क़बीला बनू नज़ीर ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक पत्थर गिरा कर धोखे से हलाक करने का मन्सूबा बनाया। अल्लाह तआला ने वह्य के द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसकी ख़बर दी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा के साथ उस क़बीला की तरफ़ गए हुए थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौरन वापस मदीना तशरीफ़ ले आए। बाद

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस क़बीला के घेराव का हुक्म दिया। रबी उल अव्वल चार हिजरी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुद हिफ़ाज़ती के ख़्याल से मजबूर हो कर बनू नज़ीर के ख़िलाफ़ फ़ौज से आक्रमण करना पड़ा जिसके नतीजा में अन्त में यह क़बीला मदीना से निकाला गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ज़वा बनू नज़ीर का अम्वाल ग़नीमत मिला तो आपने हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि को बुला कर फ़रमाया कि मेरे लिए अपनी क़ौम को बुलाओ। हज़रत साबित रज़ि ने निवेदन क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या ख़ज़रज को? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया समस्त अन्सार को बुला लो किसी भी क़बीले के हों। अत: उन्होंने औस और ख़ज़रज को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बुलाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे ख़िताब किया। आपने अल्लाह तआला की प्रशंसा की जिसके वह योग्य है। फिर अन्सार के मुहाजरीन पर किए जाने वाले उपकारों अर्थात अन्सार के मुहाजरीन को अपने घर में ठहराने और अन्सार के मुहाजरीन को अपनी जानों पर प्राथमिकता देने का वर्णन फ़रमाया कि किस तरह अन्सार ने मुहाजरीन पर उपकार किया है। फिर आपने फ़रमाया अगर तुम पसन्द करो तो मैं बनू नज़ीर से हासिल होने वाला माल फै तुम में और मुहाजरीन में बांट कर दूं। मुहाजरीन पहले की तरह तुम्हारे घरों में और अम्वाल में रहेंगे। ग़नीमत का जो माल मिला है आधा-आधा बांट लो लेकिन इसका यह अर्थ है कि जिस तरह वे पहले तुम्हारे घरों में रह रहे हैं और जो तुम उनसे उपकार का व्यवहार कर रहे हो वे करते रहो। माल यह आधा-आधा ले लो। लेकिन दूसरी अवस्था क्या है कि अगर तुम पसन्द करो तो यह अम्वाल मैं मुहाजरीन में बांट देता हूँ। अन्सार को कुछ नहीं देता। सारा माल जो मिला है वह मुहाजरीन में बांट देता हूँ फिर वे तुम्हारे घरों से निकल जाऐंगे। फिर तुम्हारे घरों में नहीं रहेंगे। अपना-अपना प्रबन्ध करें क्योंकि अब उनको माल मिल गया है। इस पर हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि और हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि ने आपस में बात की। दोनों ने मश्वरा किया और दोनों ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ये अम्वाल मुहाजरीन में बांट दें। मुहाजरीन में माल बांट दें लेकिन साथ यह भी कहा कि वे पहले की तरह हमारे घरों में रहेंगे। हम यह नहीं चाहते कि माल लेने के बाद वे हमारे घरों से निकल जाएं। जो जिस तरह हमारे घरों में रह रहे हैं और जिस तरह भाईचारा का वह सिलसिला क़ायम है अब भी वही क़ायम रहेगा। और अन्सार ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम राज़ी हैं और हमारा सिर झुका है। अगर सारा माल आप मुहाजरीन में बांट दें तो इस बात पर कोई हमें शिकायत नहीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह !अन्सार पर रहम फ़र्मा और अन्सार के बेटों पर रहम फ़र्मा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फै का माल मुहाजरीन में बांट दिया और अन्सार में से किसी को भी इसमें से कुछ नहीं दिया सिवाए दो ज़रूरतमंद आदमियों के। वे दोनों सहल बिन हनीफ़ और अबू दुजाना थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि को इब्न अबी हक़ीक़ यहूदी की तलवार प्रदान की और इस तलवार की यहूदियों में बड़ी प्रसिद्धि थी। फिर हज़रत मुआज़ रज़ि को एक तलवार दी।

(एटलस सीरत नबवी पृष्ठ 264-265)

(सबलुल हुदा वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 325 ज़िक्र ख़ुरूज बनी अलनज़ीर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1993 ई)

जब इफ़क की घटना हुई और हज़रत आयशा रज़ि पर आरोप लगाया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा और आपके ख़ानदान को बड़े कष्ट से गुज़रना पड़ा और उसी समय या कुछ समय के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा के सामने एक अवसर पर मुनाफ़क़ीन के इस ग़लत व्यवहार का वर्णन किया तो उस समय भी हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि ने निस्स्वार्थ फ़िदाईत का इज़हार फ़रमाया था। यह घटना बड़े विस्तार से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने वर्णन फ़रमाई हुआ है जो एक सहाबी हज़रत मिसतह रज़ि के वर्णन में पहले मैं विस्तार से वर्णन कर चुका हूँ। परन्तु हज़रत सअद रज़ि से सम्बन्धित हिस्सा यहां मैं प्रस्तुत कर देता हूँ। जैसा कि मैंने कहा एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस दौरान घर से बाहर तशरीफ़ ला कर सहाबा को जमा किया और फ़रमाया कोई है जो मुझे इस आदमी से बचाए जिसने मुझे दु:ख दिया है। इससे आप का अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल से था। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि जो औस क़बीला के सरदार थे खड़े हुए और उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल !अगर वह आदमी हम में से है तो हम इस को मारने के लिए तैयार हैं और अगर वह ख़ज़रज में से है तब भी उस को मारने के लिए तैयार हैं।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 06 पृष्ठ 268-270)

जंग ख़ंदक़ के दौरान अबू सुफ़ियान ने बनू नज़ीर के रईस हुय्य को बनू कुरैज़ा के रईस कअब बिन असद के पास भेजा कि मुसलमानों से किए गए मुआहदे को ख़त्म कर दो। जब वह न माना तो बातें बना कर और मुसलमानों की तबाही का यक़ीन दिला कर मुसलमानों से किए गए मुआहिदे पर अमल न करने पर राज़ी कर लिया बल्कि इस बात पर भी राज़ी कर लिया कि वह मक्का के कुफ़्फ़ार का मददगार बन जाऐंगे

इस घटना का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब बनू क़ुरैज़ा की इस ख़तरनाक ग़द्दारी का पता चला तो आपने पहले तो दो तीन बार ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया ज़ुबैर बिन अल-अवाम को हालात के पता करने के लिए भेजा और फिर नियमित रूप से क़बीला औस तथा ख़ज़रज के रईस सअद बिन मुआज़ रज़ि और सअद बिन उबादह रज़ि और कुछ दूसरे प्रभाव वाले सहाबा को एक वफ़द के तौर पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना फ़रमाया और उनको यह नसीहत फ़रमाई कि अगर कोई चिन्ता की ख़बर हो तो वापस आकर उसका सब के सामने प्रकट न करें बल्कि इशारा से काम लें ताकि लोगों में भय न पैदा हो। जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के घरों में पहुंचे और उनके रईस कअब बिन असद के पास गए तो वह बद-बख़्त उनको निहायत गर्व वाले अंदाज़ से मिला और सअदैन की तरफ से "अर्थात सअद बिन मुआज़ रज़ि और सअद बिन उबादह रज़ि की तरफ़" से मुआहिदा का वर्णन होने पर वह और इसके क़बीला के लोग बिगड़ कर बोले कि जाओ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हमारे बीच कोई मुआहिदा नहीं है। हमने कोई मुआहिदा नहीं किया।" यह शब्द सुनकर सहाबा का यह वफ़द वहां से उठकर चला आया और सअद बिन मुआज़ रज़ि और सअद बिन उबादह रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर उचित ढंग से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हालात की सूचना दी।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 584-585)

बहरहाल उस समय तो उनकी यह हरकत मुसलमानों के लिए बड़ा धक्का थी। चारों तरफ़ से मक्का के कुफ़्फ़ार ने मदीना को घेरा हुआ था। कुफ़्फ़ार मक्का से जंग की हालत के कारण से इस क़बीला के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई भी नहीं हो सकती थी लेकिन जंग के समापन पर जब शहर में वापस आए तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कश्फ़ी रंग में बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी और बग़ावत की सज़ा देने का बताया। यह हुक्म हुआ कि उनको सज़ा मिलनी चाहिए। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आम ऐलान फ़रमाया कि बनू क़ुरैज़ा के क़िलों की तरफ़ रवाना हो जाएं और नमाज़ असर वहीं पहुंच कर अदा हो और आपने हज़रत अली रज़ि को सहाबा रज़ि के एक टुकड़ी के साथ फ़ौरन आगे रवाना कर दिया। इस जंग का विस्तार कुछ लंबा है जिसमें हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का भी आख़िर पर फ़ैसला करने में भूमिका है। अब समय नहीं। इसलिए आइन्दा इन शा अल्लाह यह विस्तार से वर्णन करूँगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 24 जुलाई 2020 ई पृष्ठ 5 से 8)

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

सिर्फ इस्लाम की अमन वाली शिक्षा वर्णन करने की कोशिश की है। सिर्फ यहां ही नहीं बल्कि समस्त ग़ैर मुस्लिम दुनिया में लोगों में यही प्रभाव है कि मुसलमान अत्याचार कर रहे हैं। वे समझते हैं कि मुसलमान ही हैं जो जिहाद के नाम पर ज़ुलम तथा अत्याचार और क़तल कर रहे हैं। जहां भी मैं गया हूँ मैंने यही बात देखी है। तो यह खासतौर पर जर्मन लोगों को सामने रखते हुए बात नहीं की, जहां भी मैं जाता हूँ वहां इस्लाम की अमन वाली शिक्षा के बारे में लोगों की शंकाएं दूर करने की कोशिश करता हूँ। मैं तो तक़रीर के लिए तैय्यार भी नहीं था। जब मैं खड़ा हुआ तो मस्जिद के उद्देश्य वर्णन करने लगा और फिर इन शंकाओं को दूर करने की कोशिश की जो लोगों के ज़हनों में मुसलमानों से होते हैं। यह कोई नियमित तैय्यार की हुई तक़रीर न थी और न ही यह मेरे ज़हन में था कि मैं जर्मन लोगों को कोई विशेष पैग़ाम दूं। मैंने तो सीधे शब्दों में इस्लाम की अमन वाली शिक्षा वर्णन की है और यह बताया है कि हमारा ईमान और हमारे अनुकरण ये हैं।

एक दूसरे प्रतिनिधि ने सवाल किया कि में नहीं जानता कि आप राजनीतिक अवस्था पर कोई बात करना चाहेंगे कि नहीं। लेकिन पिछले सप्ताह तुर्की ने सीरिया के कुछ हिस्सों पर हमला किया है। आप इस हवाला से क्या कहेंगे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि कुर्दों और तुर्की हुकूमत के मध्य हालिया कशीदगी मेरी नज़र में एक अत्याचारपूर्ण क़दम है। मुझे नहीं पिता कि इस की वजह कोई राजनीतिक है या फिर तुर्क लोगों के दिलों में कुरद लोगों की दुश्मनी है, लेकिन यह जो कुछ भी हो रहा है इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ़ है। मासूम शख़्स को क़तल करना समस्त इन्सानियत को क़तल करने के बराबर है। इसलिए मैं तो उसे पसंद नहीं करता। कुर्दों और तुर्कों के मध्य जो भी झगड़े हैं, यह बैठ कर, बातचीत करके, मीटिंगज़ करके हल किए जा सकते हैं। जहां तुर्कों ने अब फ़िज़ाई और ज़मीनी हमले किए हैं, इस्लाम तो इस की किसी रूप में आज्ञा नहीं देता।

एक पत्रकार ने सवाल किया कि आपने इंटीग्रेशन के हवाला से बात की है। आपकी नज़र में इंटीग्रेशन किया है और इस हवाला से अहमदिया जमाअत का मिशन क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लोगों ने इस देश की तरफ़ हिजरत की है और जर्मन लोगों ने और जर्मन सरकार ने उन्हें यहां आने की आज्ञा दी है, यहां रहने और जीवन व्यतीत करने की आज्ञा दी है, उनको अपने समाज का हिस्सा बनाया है। उनमें से अधिकतर लोग तो अब जर्मन नेशनल्टी ले चुके हैं। अब जबकि वे इस देश के नैशनल हैं तो उन्हें ऐसे ही रहना चाहिए जैसा कि किसी देश का वफ़ादार शहरी होता है। यही इस्लाम की शिक्षा है कि देश से मुहब्बत ईमान का हिस्सा है। अब वास्तविक मुसलमान होने के नाते और जर्मन नैशनल होने के नाते उनका कर्तव्य है कि यह अपने समाज और अपनी क़ौम की बेहतरी और तरक़्क़ी के लिए काम करें। मेरी दृष्टि में वास्तविक इंटीग्रेशन यही है। इंटीग्रेशन का अर्थ यह नहीं है कि अब क्लबों में जाएं और यह कि अगर क्लबों में न जाएं और शराब इत्यादि ना पियें उस समय तक इंटीग्रेशन नहीं होती या अगर औरतें हिजाब ले रही हैं तो इससे इंटीग्रेशन प्रभावित होगा। अगर आप देश और क़ौम से वफ़ादार हैं तो आप पूर्ण तौर पर इंटीग्रेट कर चुके हैं

यह प्रैस कान्फ्रैंस क़रीबन नौ बजे समापन को पहुंची। इस के बाद यहां से वापस बैयतुस्सुबूह फ्रैंकफर्ट के लिए रवानगी हुई। साढ़े 9 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बैयतुस्बूह तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने मेहमानों पर गहरे प्रभाव छोड़े बहुत से मेहमानों ने अपने विचारों का इज़हार किया। मेहमानों के विचार प्रस्तुत हैं

डाक्टर हार्ट मन साहिब (Dr.Hartmann) अपने विचारों का इज़्हार करते हुए कहते हैं कि लोग जितने भी खुले ज़हन का दावा करें परन्तु फिर भी उनके ज़हनों में शंकाएं मौजूद होती हैं और इमाम जमाअत अहमदिया की गुफ़्तगु तो शंकाएं दूर करने वाली थी ही परन्तु उनकी शख़्सियत का प्रभाव कुछ ऐसा विनीत और हमदर्द इन्सान का था कि मुझे लग रहा था कि उनसे कोई भी सवाल पूछा जा सकता है और ऐसे व्यक्ति से बात करने के बाद दिल में कोई शंकाएं और फ़ासले नहीं रहते।

मीडिया प्रतिनिधियों में से Sat-1 जो एक बड़ा TV चैनल है इसके प्रतिनिधि मिस्टर गेरट (Mr. Gerrit) ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए लिखा है कि पहले तो मुझे इतने बड़े स्तर पर आयोजन पर आश्चर्य है और इस पर जिस भाईचारे आपसी मुहब्बत और उत्तम प्रबन्ध से आपके लोग इसके आयोजन के लिए काम कर रहे हैं, वह मेरे लिए बिलकुल अविश्वसनीय है, परन्तु मुझे विश्वास करना पड़ेगा क्योंकि में यह सब कुछ अपनी आँखों से देख रहा हूँ।

वेज़ बादिन हस्पताल की डाक्टर फेरारी (Dr.Ferrari) साहिबा कहती हैं कि मैं आज के आयोजन में शामिल होना अपने लिए सम्मान समझती हूँ और इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर से मुझे जो शिक्षा और पैग़ाम मिला है इसको में अपने लिए ही नहीं बल्कि अपनी औलाद के लिए भी ज़रूरी विचार करती हूँ। धर्म से ऊंचा हो कर इन्सानी दुखों में हमदर्दी करना और मिटती हुई इन्सानी क़दरों की स्थापना ही इस समय विश्व की जातियों के लिए मुहब्बत और बराबरी के लिए अनिवार्य बात है और इस तक़रीर ने हर पहलू से इस ज़रूरत को उजागर किया है

सिटी पुलिस के एक प्रतिनिधि ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि आपकी जमाअत की शान्ति वाली और मानव जाति से मुहब्बत करने की प्राय शौहरत से तो मैं परिचित था और शहर की अवाम भी जानती है परन्तु आज इस मस्जिद के बनने के बाद इस शिक्षा को एक वजूद मिल गया है जिसे लोग मस्जिद की शक्ल में आते-जाते देख भी लिया करेंगे। और इस तरह आपकी जमाअत की अमन और मुहब्बत की शिक्षा का जिस्मानी और भौतिक इज़हार भी शहर में मस्जिद की सूरत में देखा जा सकेगा। इमाम जमाअत अहमदिया ने जिस मुहब्बत और भाईचारे का पैग़ाम अपनी तक़रीर में दिया है मस्जिद इसी पैग़ाम अमन तथा प्यार की अनुकरणीय रूप है और ख़ुशी की बात है कि आपने इस की उद्घाटन आयोजन में हर वर्ग को बुलाया गया है।

मायनज़ शहर से एक चर्च के प्रतिनिधि मिस्टर अंगन बर्गर (Mr. Angenberger) साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने पड़ोसी के अधिकार के हवाले से जो इस्लामी शिक्षा विस्तार के साथ प्रस्तुत की है यह मेरे लिए बिलकुल नई और दिलचस्प थी और धार्मिक व्यक्तियों से इस हद तक पड़ोसी के सीमा की कैद मैंने पहली बार सुनी है

एक राजनीतिक जमाअत SPD के प्रतिनिधि ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की अम्न वाली शिक्षा और मानव जाति के समाजी अधिकार पर इतनी ताकीद को अपनी तक़रीर का विषय बना कर हमारे लिए इस्लाम और मुसलमानों को शान्ति वाला समझना आसान कर दिया है और मुझे ख़ुशी है कि इससे समाज में आपसी मुहब्बत और भाईचारे की फ़िज़ा को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।

एक औरत पत्रकार मस वर्नर (Miss Werner) कहती हैं कि मुझे उद्घाटन से पहले बुनियाद रखने के आयोजन में भी इमाम जमाअत अहमदिया और उनकी बेगम साहिबा से मुलाक़ात का अवसर मिला था। दोनों मुहब्बत का पैग़ाम आम करने वाले वजूद हैं। अगर लोग ऐसी शिक्षा पर अनुकरण करना शुरू कर दें तो समाज अमन तथा प्यार का अनुकरणीय नमूना बन सकता है

इसी शहर से शामिल होने वाली एक औरत मस मेरी (Miss Mari) ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया शहरियों के अधिकार और हमदर्दी के बारे में दिली भावनाएँ से भरपूर बात करते हैं और उनकी तक़रीर से उनकी ज़ात में हमदर्दी और मुहब्बत का अंदाज़ा होता है जो उनको हर इन्सान से है, चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी धर्म से हूँ। मुझे उनकी धर्म के भेदभाव के बिना हमदर्दी और मुहब्बत मानव जाति की शिक्षा बहुत पसन्द आई है

इंटीग्रेशन कमिशनर मिस्टर क्रिस्टोफ मांजूरा (Mr. Christoph Manjura) ने याद दिलाया कि नींव रखने के आयोजन वाले दिन भी

बारिश हो रही थी परन्तु इमाम जमाअत अहमदिया के तशरीफ़ लाने के साथ ही आकाश साफ़ हो गया और सूरज निकल आया और आयोजन के प्रबन्धों में सुविधा रही और आज भी दिन भर सूरज निकला रहा और कल से फिर बारिश की भविष्यवाणी है

इसी तरह मिस्टर हांस पीटर (Mr.Hans Peter) भी इंटीग्रेशन के विभाग से सम्बन्ध रखते हैं। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया की इस तक़रीर का हर वर्ग में प्रकाशन होना चाहिए कि लोग जान सकें कि केवल मौखिक दावे कुछ महत्त्व नहीं रखते जब तक अनुकरणीय रंग में इन्सानी क़दरों का सम्मान करके न दिखाया जाए। मुझे जमाअत अहमदिया और इमाम जमाअत अहमदिया अपने कथन तथा कर्म में समानता के कारण से बहुत प्रिय और सम्मान योग्य लगते हैं। और मैं चाहता हूं कि समाज के अन्य वर्गों भी इन्सानी क़दरों के सम्मान में इसी दृष्टिकोण को बढ़ावा दें

एक स्थानीय हस्पताल के डाक्टर ने अपने विचारों का इज़्हार करते हुए कहा कि धार्मिक क्षेत्रों से अगर ऐसी शिक्षा मिले जिसका इज़्हार आज इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर से हुआ है तो समाज में इन्सानी क़दरों का सम्मान स्थापित हो सकता है। चर्च को भी ऐसा दृष्टिकोण आम करना होगा। अभी चर्च बहुत से सवालों से आँखें चुराता है जब कि इमाम जमाअत अहमदिया ने हर संभावित सवाल और आरोप को लेकर कई दृष्टि से उसके उत्तर दिए और बे-ख़ौफ़ स्पष्टीकरण के साथ इस्लाम के दृष्टिकोण की वज़ाहत की। ख़ुशी की बात यह है कि उनकी हर वज़ाहत और व्याख्या इन्सानी समाज को अमन, सुलह और मुहब्बत की तरफ़ ले जाने वाली है।

डाक्टर उसामा अब्बू हसन कहते हैं कि आपके ख़लीफ़ा ने मूल इस्लामी शिक्षा और वास्तविक इस्लाम का सुन्दर चेहरा दिखा कर इस्लाम के बारे में ग़लतफ़हमी दूर करने के अतिरिक्त आम एलिनास के दिलों से इस्लाम का भय और डर उतार दिया है

एक मेहमान आदरणीया आईशा साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं कि मैंने इस्लाम की सुन्दर तस्वीर और तरह से देखी है मगर आज के आयोजन ने मुझे और तरह से इस्लाम का परिचय करवाया है। जो इतना दिलकश है कि मेरी इच्छा है कि मैं अगली भी ऐसी आयोजनों में शामिल कर सकूं।

आदरणीया हाईक बराडर (Heik Brader) साहिबा कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने ख़ुदा को सारी दुनिया के निकट बताया। रब्बुल आलमीन जैसा परिचय रखने वाले व्यापक धारणा ख़ुदा में मुझे बहुत दिलचस्पी नज़र आई। और हैरत-अंगेज़ बात यह है कि ख़ुदा एक और वाहिद होते हुए भी सब धर्मों और सारे इन्सानों और क़ौमों का ख़ुदा है और सबको बिना किसी भेद के पालता है

एक ला फ़र्म से आए हुए वकील (Joachim Macholdt) कहते हैं जमाअत अहमदिया की खुली सोच पर मैं और मेरा दफ़्तर एक साथ हैरत रखते हैं और आज इमाम जमाअत अहमदिया ने पड़ोसी के अधिकार वर्णन करते हुए पड़ोसी की प्रशंसा में जो खुलापन वर्णन किया है और शहर का शहर इस खुलेपन में समा गया है, यह बात हमारी पहली हैरत पर एक और हैरान करने वाली वृद्धि है। इस तरह शहर वालों के लिए जमाअत अहमदिया की हमदर्दी और ख़बरगैरी का क्षेत्र और व्यापक हो गया है

आदरणीया Maike Henningsen साहिबा जो एक NGO की प्रमुख हैं कहती हैं कि मैं यहां की मेहमान-नवाज़ी से बहुत प्रभावित हुई हूँ और ख़लीफ़ा के शब्दों ने स्पष्ट किया कि आप सारी दुनिया के लिए नेक तमन्नाएं रखते हैं और समस्त धर्मों से अच्छे सम्बन्धात के इच्छुक हैं। ख़लीफ़ा की तक़रीर के समस्त बिन्दु प्रशंसा योग्य हैं और बहुत ही दिलचस्प थे।

डेनीस मीरस (Dennis Merz) साहिब वर्णन करते हैं कि मैंने समस्त मुक़र्ररीन को सुना मगर जब इमाम जमाअत अहमदिया माईक्रोफ़ोन के सामने खड़े हुए तो एक और किस्म की कैफ़ीयत छा गई। आपकी आवाज़ और आपका लहजा सबसे अलग था जिसका मैं ख़ुद पर एक रुहानी असर महसूस कर रहाथा और बड़े ग़ौर से आपका ख़िताब सुना। जो पैग़ाम आपने हमें दिया वह केवल इस्लाम के बारे में नहीं था बल्कि सारी दुनिया के लिए एक बहुत प्रमुख शिक्षा थी।

एक औरत आदरणीया नैन(Nan) साहिबा ने कहा कि आपके ख़लीफ़ा ने मानव सेवा के हवाला से जितनी व्याख्या और ज़ोर देकर बात की है वह मेरे लिए हैरान करने वाले है क्योंकि ऐसा संभव नहीं अगर कहने वाला ख़ुद मानव हमदर्दी की गहरी भावनाएँ न रखता हो।

कैथोलिक चर्च के एक पादरी ने कहा कि मैंने आज तक इतनी अच्छी तक़रीर नहीं सुनी। समस्त दृष्टिकोण जो इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्णन किए हैं, मैं उनसे सम्पूर्ण रूप से सहमत रखता हूँ। दूसरों से मुहब्बत करना और ख़ुदा के अधिकार अदा करना ये सब बातें मेरी शिक्षा में भी हैं। इसी तरह मैंने आज तक इस्लाम के ख़ुदा पर इतना गहरा और गूढ प्रितिक्रया नहीं सुनी जो ख़ुदा की वहदानीयत के सम्पूर्ण दावे के साथ इसी ख़ुदाए वाहिद को दुनिया के समस्त धर्मों, देशों और इन्सानी समाजों का पालने वाला ख़ुदा क़रार देता है और अपनी ख़बर-गेरी और ख़ैर पहुंचाने के लिए ज़मीन वालों में अपने बेगाने और धर्म का भेद नहीं करता। काश! दुनिया के समस्त लीडर इस तरह की तक़ारीर करते तो आज दुनिया में अमन स्थापित होता। इस के बाद उसने कहा कि वह जमाअत अहमदिया से सम्पर्क में रहना चाहता है और मस्जिद को ज़रूर देखने आएगा।

एक औरत बाऊर (Bauer) साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया का हाल में आना अपने साथ एक इंसपायरेशन लेकर आया। मेरे लिए यह एक बहुत बड़े सम्मान का कारण है कि मैं एक ऐसी बरकत वाली महफ़िल में शामिल हो सकी। कई शंकाएं ग़लत-फ़हमियाँ जो मेरे ज़हन में थीं वह इमाम जमाअत अहमदिया ने अपने स्पष्ट बात और इस्लामी शिक्षा की वास्तविक व्याख्या से दूर फ़र्मा दीं। अब मेरे लिए बहुत कुछ स्पष्ट हो चुका है। जो सन्तोष आपके वजूद से प्रकट हो रहा था उस को वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं क्योंकि इसका सम्बन्ध महसूसात से है।

एक जर्मन औरत ने अपना विचार वर्णन करते हुए कहा कि आपके ख़लीफ़ा की शख़्सियत से यह बात नज़र आती है कि जो कुछ आप कहते हैं इस पर आप अनुकरण भी करते हैं। इससे उनका वजूद मेरे लिए सनद की हैसियत धारण कर जाता है। जर्मनी के बहुत से सियास्तदान सेहोफ़र (Seehofer) (मौजूदा वज़ीर दाख़िला) और उन जैसे अन्य लोगों को चाहिए कि वे आपके ख़लीफ़ा के आदेशों से लाभ उठाएं । आपकी तक़रीर बहुत प्रभावित करने वाली और वर्तमान हालत की ज़रूरत थी। मैं आपकी दावत की दिली आभारी हूँ।

Strohe साहिब जो कि जमाअत अहमदिया के बहुत गहरे दोस्त हैं और कुछ समय फ़ौज में बतौर पादरी के सेवा करते रहे। वह वर्णन करते हैं कि पहली बात जिसका मैं वर्णन करना चाहता हूं वह यह है कि हुज़ूर अक़्दस का वजूद विनम्रता से भरा हुआ मालूम होता है। मैं इस बात से हैरान हूँ। आपके ख़िताब का अंदाज़ और विषय बिलकुल स्पष्ट था अर्थात मुझे यह लगा कि यह तक़रीर बहुत अच्छी तहक़ीक़ पर आधारित है और हमारे समाज का बेहतरीन समीक्षा है और बड़े उच्च रंग में वर्णन हुआ है। खासतौर पर 2 बातें इस ख़िताब में स्पष्ट की गईं, पहली बात अल्लाह तआला के अधिकार अदा करना और दूसरी बात इन्सानों के अधिकार अदा करना। हमारी दुनिया के लिए फ़िलहाल यही सबसे बड़ा काम है।

डाक्टर Rashid Delbasteh साहिब जो शहर वेज़ बादिन के कौंसल के मैंबर हैं वर्णन करते हैं कि उन्हें आज इस आयोजन में शामिल हो कर बहुत अच्छा महसूस हुआ मैं ख़ुद भी मुसलमान हूँ लेकिन आप लोगों की जमाअत मुझे बहुत पसंद है क्योंकि आप लोग सिर्फ आपस में ही एक दूसरे से अमन और प्यार से व्यवहार नहीं करते बल्कि मेहमानों से भी ऐसा ही सुलूक करते हैं। महोदय हुज़ूर अनवर के बारे में अपने विचार वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह मेरे निकट एक विशेष शख़्सियत हैं। बहुत आसानी से इन्सान उनके बारे में कह सकता है कि वह हक़ीक़त में समय के ख़लीफ़ा हैं। मुझे पहले मस्जिद में उन्हें देखने का अवसर मिला और अब इधर भी मैंने उन्हें क़रीब से देखा तो बहुत ख़ुशी हुई और यही मुझे स्पष्ट हुआ कि हक़ीक़त में एक ख़लीफ़ा हैं।

Susanne Kleinschmidt साहिबा जो टीचर हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं कि आज के आयोजन बहुत दिलचस्प था क्योंकि मुझे खासतौर पर जमाअत अहमदिया का परिचय हुआ। इस बात ने मुझ पर बहुत गहरा असर छोड़ा जो समय के ख़लीफ़ा ने इतना स्पष्ट किया कि इस्लाम

एक अमन वाला मज़हब है। ख़लीफ़ा साहिब का ख़िताब बहुत ही प्रभावित करने वाला था। जो बात मुझे इस ख़िताब में सबसे अच्छी लगी वह यह थी कि हम सब इन्सानों का ख़ालिक़ एक ही है और हम सब एक ही ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। यह बात हम सबको हमेशा याद रखनी चाहिए।

Uta Brehm साहिबा जो Die Grne पार्टी वेज़ बादिन की सदर हैं कहती हैं कि सबसे अधिक आज मुझे आपके ख़लीफ़तुल मसीह का ख़िताब पसन्द आया क्योंकि वह बहुत ही प्रभावित करने वाला था। खासतौर पर मुझे यह बात हैरत वाली लगी कि वह धार्मिक सरबराह हो कर सिर्फ धार्मिक मामलों पर नहीं बात कर रहे थे बल्कि इतना व्यापक ख़िताब था। उन्होंने socio-political विषयों पर ख़िताब किया जो प्रत्येक के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

एक औरत ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि मुझे यह बात बहुत ही पसंद आई कि his holiness ने अपने ख़िताब में वह बातें खुल कर बता दीं जिनके कारण से आजकल इस्लामी दुनिया में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। बहुत ही अच्छे तरीक़ा में his holiness ने स्पष्ट कर दिया कि असल में तो इस्लाम ने अमन फैलाना है। जो आज इस्लाम की शिक्षा बताई गई, यह तो पूरी दुनिया में फैलानी चाहिए अर्थात यह कि असल में रवादारी भी इस्लाम में पाई जाती है और इस तरह से अमन स्थापित किया जा सकता है।

Michael David साहिब जो वेज़ बादिन शहर के deputy councillor हैं कहते हैं कि आज के आयोजन बहुत ही सफल रहे हैं। खासतौर पर जो इमाम जमाअत ने ख़िताब में वर्णन किया कि समस्त धर्मों के लोगों को और समस्त इन्सानों को आपस में अमन से मिलजुल कर रहना चाहिए। यह एक ऐसी चीज़ है जो आजकल के ज़माना में बहुत विशेष महत्त्व-पूर्ण वाली है।

Conny Kuippel साहिबा जिनका सम्बन्ध Die Grne पार्टी से है और जो शहर वेज़ वादन के पार्लीमैंट में integration विभाग में काम करती हैं अपनी भावनाओं का इज़हार करते हुए कहती हैं कि मुझे ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत हौसला बढ़ाने वाला महसूस हुआ और मेरे दिल को इससे खुशी हुई। एक बात ख़लीफ़ा की जो मेरे लिए भी बहुत अहम है और मुझे कभी भूलेगी नहीं वह यह थी कि समस्त अहमदियों को अपने माहौल के लिए लाभदायक वजूद बनना चाहिए। इस बात पर सिर्फ अहमदियों को ही नहीं बल्कि सब को अनुकरण करना चाहिए। अगर समस्त मुसलमान फ़िर्क़े आप अहमदियों की तरह open minded होते तो हमारा आपस में मिल-जुल कर रहना बहुत आसान हो जाता।

Mario Bohrmann साहिब एक पत्रकार हैं और अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं कि मुझे his holiness का ख़िताब पसन्द आया। उन्होंने समस्त द्वेष जो आजकल की दुनिया में इस्लाम के बारे में फैले हुए हैं जैसा कि जिहाद उन को दूर किया। ख़लीफ़ा एक ऐसी शख़्सियत हैं जो दिल मोह लेने वाली है। मुझे अभी प्रैस कान्फ्रैंस भी 2 सवाल करने का अवसर मिला। यही महसूस हुआ कि आप बहुत ही प्यार करने वाले हैं और उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट सी भी नज़र आती है।

Uwe Widera साहिब एक स्कूल में टीचर हैं और कहते हैं कि मुझे इधर पहली बार जमाअत अहमदिया का परिचय हुआ। सारे आयोजन का प्रबन्ध बहुत अच्छा था, खासतौर पर ख़लीफ़ा का ख़िताब दिलचस्प लगा। मुझे यह बात बहुत अहम लगी जो ख़लीफ़ा ने वर्णन की है कि भाईचार पर ज़ोर दिया जाए और दूसरे धर्मों के लोगों और इसी तरह समस्त इन्सानों के साथ प्यार से व्यवहार किया जाए। यह आजकल के समाज में बहुत ही कम हो गया है और दूसरे धर्मों इस बात को भूलते चले जा रहे हैं। लेकिन आप लोग इस को महत्त्व-पूर्ण समझते हैं। अब मैंने आप लोगों की मस्जिद में भी ज़रूर जाना है और मेरे सारे जो सवाल पैदा हो रहे हैं उनको हल करवाना है

महोदय ने और अधिक हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बारे में कहा कि his holiness का ख़िताब तो बहुत ही अच्छा था और यह समस्त दुनिया के हर समाज के लिए महत्त्वपूर्ण रखता है। जो ख़लीफ़ा ने बातें वर्णन की हैं यह आजकल दूसरे धर्म वाले भूलते जा रहे हैं। और अगर दुनिया इन बातों पर अनु-करण करना शुरू कर दे तो दुनिया में जंगें बिलकुल ख़त्म हो जाएं।

Heike Ebel साहिबा देज़बादन स्कूल में पढ़ाती हैं और अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहती हैं कि मुझे एक बात जो बहुत स्पष्ट देखने को मिली वह यह है कि इधर सिर्फ़ अमन और प्यार तथा मुहब्बत की बातें ही नहीं की जातीं बल्कि इस पर अनुकरण भी किया जाता है। आप लोग integration को समझे हैं और इसका अच्छा नमूना प्रस्तुत करते हैं। ख़लीफ़ा मुझे हक़ीक़त में पवित्र (holy) लगते हैं और एक वास्तविक धार्मिक लीडर महसूस होते हैं। मेरे अन्दर ख़लीफ़ा साहिब ने एक तब्दीली पैदा की है जो कि उनकी विशेष पाकीज़गी की वजह से पैदा हुई है। उनके दिल से एक नूर निकलता हुआ महसूस होता है जो प्रत्येक को अपने साथ जुड़ा करने वाला है। ख़लीफ़ा एक वास्तविक रुहानी शख़्सियत महसूस होते हैं और मैं उन्हें बतौर पवित्र शख़्स स्वीकार कर सकती हूँ।

एक औरत वर्णन करती हैं कि मैं जमाअत को 10 साल से जानती हूँ और हमेशा से ही आप लोग बहुत प्यार करने वाले नज़र आए हैं। लेकिन ख़लीफ़ा को पहली बार देखने का अवसर मिला और यह स्पष्ट हुआ कि अगर प्रत्येक इन्सान ऐसी सोच रखने वाला हो जाए तो दुनिया में अमन स्थापित हो जाएगा।

कैथोलिक चर्च का एक मैंबर वर्णन करता है कि मैंने इससे पहले कभी भी किसी धार्मिक लीडर को इस बात पर इतना ज़ोर देते नहीं सुना कि पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करो। यह प्यार और मुहब्बत वाली शिक्षा प्रस्तुत की गई।

Klaus Bartel साहिब ने अपने विचारों वर्णन करते हुए कहा कि अमन स्थापित करने के लिए सबसे अहम बात जो ख़लीफ़ा ने भी वर्णन की यही है कि भावनाओं को सम्मुख रखा जाना चाहिए। मुझे इस बात का इल्म तो था कि इस्लाम में विभिन्न फ़िर्क़े होते हैं। लेकिन इस जमाअत का बहरहाल नहीं पता था जो इतनी अम्न पसंद हो।

Muktari साहिब जो कि वेज़ बादिन की पुलिस में काम करते हैं ने कहा कि आज का प्रोग्राम यह स्पष्ट कर रहा था कि मुसलमान अपनी एक और तस्वीर भी दिखाना चाहते हैं कि इस्लाम हक़ीक़त में एक अम्न पसंद धर्म है। ख़लीफ़ा ने यह स्पष्ट कर किया कि अफ़्रीक़ा में भी आप विभिन्न projects करवाते हैं मुझे बहुत ही अच्छा लगा

Mehmet Yilmaz साहिब वर्णन करते हैं कि ख़लीफ़ा का यह पैग़ाम कि आपस में पड़ोसियों को तो खासतौर पर प्यार और मुहब्बत से इकट्ठा रहना चाहिए बहुत ही ज़रूरी है। ख़लीफ़ा को मैं पहले से भी जानता हूँ क्योंकि पहले भी उनकी किताबें मैंने पढ़ी हैं। मेरी इच्छा है कि दूसरे मुसलमान लीडर भी इसी तरह अमन फैलाईं जिस तरह ख़लीफ़ा अमन का पैग़ाम फैला रहे हैं

एक evangelical theology professor कहते हैं कि ख़लीफ़ा का ख़िताब मेरे लिए तो बहुत ही हैरत में डालने वाला था। मुझे एक ऐसे इस्लाम के प्रतिनिधि को जान कर बहुत ही ख़ुशी हुई जो इतना प्यार और मुहब्बत की शिक्षा को फैला रहा है और जिसने यह बात भी स्पष्ट कर दी कि इन्सानियत से प्यार तथा मुहब्बत से व्यवहार करना भी इबादत है

Gabriela Stochhalter Eiche साहिबा वर्णन करती हैं कि आज का आयोजन मुझे बहुत पसन्द आया। ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत दिल में प्रभाव करने वाला था। ख़ासतौर पर जो पहलू आज के समाज में ज़रूरी हैं उनको ख़लीफ़ा ने स्पष्ट तौर पर वर्णन किया अर्थात यह कि अमन स्थापित किया जाए, आपस में मुहब्बत से रहा जाए, पड़ोसियों से अच्छा सुलूक किया जाए, ग़रीबों की मदद की जाए जैसे अफ़्रीक़ा में कुँएं बनाए जाते हैं इत्यादि। ख़लीफ़ा मुझे तो एक बहुत ही अमन पसन्द और प्यार तथा मुहब्बत वाले व्यक्तित्व महसूस हुए।

Thomas Schwarze साहिब जो एक स्कूल के प्रिंसिपल हैं कहते हैं कि आज के आयोजन एक हैरत में डालने वाला आयोजन है। प्रत्येक इधर इतने प्यार से व्यवहार कर रहा है और हमारी मेहमान-नवाज़ी कर रहा है। मुझे कल्पना ही नहीं था कि आज के दिन एक his holiness जैसी पवित्र शख़्सियत को देखने का अवसर मिलेगा। ख़लीफ़ा तो एक ऐसी शख़्सियत महसूस होते हैं जो बिलकुल जानते हैं कि वह क्या बात कर रहे हैं। उनकी बात करने का अंदाज़ ही इस तरह का है कि वह बहुत से लोगों के दिलों पर असर कर सकते हैं।

Gisine Werner साहिबा वर्णन करती हैं कि आज मस्जिद के उद्घा-टन के आयोजन जो आयोजित किया गया है बहुत अच्छा था। ख़लीफ़ा बहुत

ही प्यार करने वाले लगते हैं और जो बात करते हैं इसका प्रत्येक शब्द ठीक है और इस पर यक़ीन करना चाहिए।

Wolfgang Nickel साहिब शहर वेयज़बादन के पार्लीमैंट के मैंबर हैं। वह अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहते हैं कि मुझे आपके विभिन्न प्रोग्रामों में शामिल होने का अवसर मिलता रहता है। बुनियाद रखने के अवसर पर भी मैं शामिल था। मैं ख़लीफ़ा को बहुत ध्यान से देखता रहा हूँ और उनका ख़िताब भी मैंने सुना। हैरान करने वाली बात है कि कितने शान्ति से और objective तरीक़ा से वह अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। जो बातें उन्होंने की हैं इससे अधिक मैं तो बहरहाल नहीं कुछ कर सकता

एक मुसलमान औरत वर्णन करती है कि ख़लीफ़ा के शब्द बहुत प्रभावित करने वाले थे। दुनिया के आज के हालात अगर देखे जाएं तो उनके शब्द बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। धर्म के आज दोबारा स्थापित किया जा रहा है।

"मस्जिद मुबारक" वेज़ बादिन के उद्घाटन की इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने कवरेज दी। तीन टीवी चैनल्ज़, सात अख़बारों और पाँच ऑनलाइन मीडिया ने भी ख़बर दी। इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया की इस कवरेज के द्वारा 79 लाख,59 हज़ार 970 लोगों तक पैग़ाम पहुंचा

Wiesbadener Tagblatt ने ख़बर देते हुए लिखा:"ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा कि उनको इस बात की ख़ुशी है कि शहर ने उनका खुले दिल के साथ स्वागत किया है। अक्सर मस्जिदों के बारे में शंकाएं और भय पाए जाते हैं। हालाँकि अगर मस्जिदों में उग्रवाद फैलाया जाए तो इस की वजह इस्लाम नहीं। इन्सानी इक़दार की हिफ़ाज़त करना हमारा फ़र्ज़ है। क़ुरआन करीम में पड़ोसी के बहुत अधिकार वर्णन किए गए हैं।'

" Sat-1 Regional "टीवी चैनल ने दो मिनट 8 सैकण्ड की ख़बर दी। जिसमें वेज़ बादिन प्रैस कान्फ्रैंस से हुज़ूर अनवर का यह उद्धरण भी प्रस्तुत किया

"इस शहर के निवासियों को अपने दिल में कोई भय नहीं होना चाहिए क्योंकि हम एक बहुत पुरअमन जमाअत हैं। इसलिए कि हम इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के अनुयायी हैं।

15 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 50 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, रिपोर्टें और ख़ुतूत देखे और हिदायतों से नवाज़ा।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 11बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 19 फ़ैमिलीज़ के 76 लोगों और 2 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात कारने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 17जमाअतों से आई थीं। उनके अतिरिक्त पाकिस्तान से आने वाले एक दोस्त ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कई फ़ैमिलीज़ अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात को लिए बड़ी लंबी दूरी तय कर आएं। Pulheim और Stuttgart से आने वाले 215 किलोमीटर,Freiburg से आने वाले 250 किलोमीटर,Calw से आने वाले 285 किलोमीटर और म्यूनख़ (Munchen) से आने वाले 405 किलोमीटर की दूरी तय करके आए थे।

इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाएं। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 12 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

जामिया अहमदिया जर्मनी में तशरीफ ले जाना

आज प्रोग्राम के अनुसार जामिया अहमदिया जर्मनी के लिए रवानगी थी। 1 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और जामिया अहमदिया जर्मनी के लिए रवानगी हुई। जामिया अहमदिया जर्मनी बैयतुस्सुबूह से लगभग 50 किलोमीटर के दूरी पर Riedstadt शहर में स्थित है। 2 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जामिया अहमदिया तशरीफ़ लाए। आदरणीय शमशाद अहमद क़मर प्रिंसिपल जामिया अहमदिया जर्मनी ने अपने टीचरों और छात्रों के साथ हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और मुबारकबाद कहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुल अज़ीज़ तशरीफ़ ले आए और नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ पढ़ने के लिए जमाअत Riedstadt के मैंबर भी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

नमाज़ों की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हॉस्टल का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर एक कमरे में तशरीफ़ ले गए और कमरे का विस्तार से जायज़ा लिया। इस अवसर पर प्रिंसिपल साहिब ने निवेदन किया कि इस कमरा में 6 छात्र रहते हैं और 6 छात्रों के लिए यह कमरा तंग है। प्रत्येक लड़के के लिए अलमारी और टेबल उपलब्ध नहीं किया जा सकता। प्रिंसिपल साहिब ने निवेदन किया कि होस्टल की तीसरी मंज़िल अगर पूरी नहीं तो इसका एक हिस्सा भी बनाया तो स्थान की कमी पूरी हो सकती है

इस पर हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब जर्मनी से सम्बोधित होते हुए फ़रमाया। यद्यपि अन्य जमियों में भी स्थान की तंगी है। लेकिन छात्रों की संख्या तो बहर-हाल बढ़नी है। अत: और अधिक बनाने की तरफ़ ध्यान देना चाहिए

हास्टल की सफाई के बारे में हुज़ूर अनवर के पूछने पर प्रिंसिपल साहिब ने निवेदन किया कि हॉस्टल की सफाई रोज़ाना होती है

हॉस्टल के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ खाने की मार्की मैं तशरीफ़ ले गए। जहां बार्बेक्यू का प्रबन्ध किया गया था। मार्की को बड़ी ख़ूबसूरती से सजाया गया था। मार्की के अंदर विशेष गुज़रने के स्थान को दोनों तरफ से फूलों और पौधों से सजाया गया था और इसी तरह खाने की मेज़ main table के सामने भी एक छोटे साइज़ के फ़व्वारे को छोटे साइज़ के पौधों के मध्य बड़ी ख़ूबसूरती से रखा गया था। मार्की मैं छात्र क्लास के अनुसार और इस तरीक़ से बैठे थे कि सब छात्रों अपने प्यारे आक़ा को देख सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने गुफ़्तगु के दौरान आदरणीय प्रिंसिपल साहिब को हिदायत फ़रमाई कि छात्रों को ब्राउन ब्रेड दें। सफ़ैद ब्रेड बंद कर दें। क्योंकि यह नुक़्सान देती है। इसी तरह खानों में प्रयोग होने वाले मसालों के बारे में इरशाद फ़रमाया कि यह बाज़ारी मसालहे जो किसी भी ब्रांड के पैक हुए और पिसे हुए मिलते हैं ठीक नहीं हैं। यह सेहत के लिए नुक़्सान देने वाले हैं। अपनी चीज़ें ख़ुद पीस कर मसालहा तैय्यार किया करें।

खाने के बाद हुज़ूर अनवर ने छात्रों को जामिया हाल में जाने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई। हुज़ूर अनवर जामिया हाल में तशरीफ़ लाने से पहले दया करते हुए बार्बेक्यू तैय्यार करने वाले काम करने वालों के पास तशरीफ़ ले गए और उनका हौसला बढ़ाया इसी तरह बार्बेक्यू बनाने के हवाला से उनको मसालिहा लगाने के तरीकों के बारे में हिदायतों से नवाज़ा।

(शेष.....)

☆ ☆

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROPAR. PUNJAB

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 6 August 2020 Issue No.32

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मैत्री सन्देश

पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न उत्तर के रूप में

(प्रश्न 1): हुज़ूर अलैहिस्सालम ने किताब के आरम्भ में क्या दुआ की?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया ए मेरे क़ादिर ख़ुदा। हे मेरे सर्वशक्तिमान ख़ुदा, हे मेरे प्यारे पथ-प्रदर्शक! तू हमें वह मार्ग दिखा जिस पर चलकर तुझे पाते हैं सत्यनिष्ठ और निश्छल लोग तथा हमें उन मार्गों से बचा, जिनका उद्देश्य केवल कामवासनाएँ हैं या द्वेष या वैर या दुनिया का लोभ एवं लालसा।

(प्रश्न 2): हिन्दू और मुसलमान सैंकड़ों मतभेदों के बावजूद किस बात में साझी रखते हैं?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमायाहम सब क्या मुसलमान और क्या हिन्दू सैकड़ों मतभेदों के बावजूद उस ख़ुदा पर ईमान लाने में साझे हैं जो संसार का स्रष्टा एवं स्वामी है और इसी प्रकार हम सब मनुष्य के नाम में भागीदारी रखते हैं।

(प्रश्न 3): एक देश के बाशिंदे होने के एतबार से हमारा क्या फ़र्ज़ है?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया कइसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हार्दिक शुद्धता तथा नेक नीयत के साथ परस्पर मित्र बन जाएँ और धार्मिक एवं सांसारिक संकटों में परस्पर हमदर्दी करें और ऐसी हमदर्दी करें कि जैसे एक दूसरे के अंग बन जाएँ।

(प्रश्न 4):हुज़ूर अलैहिस्सालम ने आम हमदर्दी के बारे में क्या शिक्षा दी है?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया वह धर्म, धर्म नहीं है जिसमें सार्वजनिक हमदर्दी की शिक्षा न हो और न वह इन्सान इन्सान है जिसमें हमदर्दी की भावना न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी क़ौम से भेदभाव नहीं किया। वायु, जल, अग्नि और मिट्टी और इसी प्रकार उसकी समस्त पैदा की हुई वस्तुएँ अनाज, फल और औषधि इत्यादि से समस्त क़ौमें लाभ प्राप्त कर रही हैं। अत: ये ख़ुदाई व्यवहार हमें सीख देते हैं कि हम भी अपनी मानवजाति से सहानुभूति और व्यवहार के साथ और तंग दिल और संकीर्ण विचार न बनें।

(प्रश्न 5):हुज़ूर अलैहिस्सालम ने ख़ुदा के अख़लाक़ की इज़्ज़त न करने वालों का क्या अंजाम बयान फ़रमाया?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया यदि हम दोनों क़ौमों में से कोई क़ौम ख़ुदा के आचरण का सम्मान नहीं करेगी और उसके पवित्र आचरणों के विपरीत अपना आचरण बनाएगी तो वह क़ौम शीघ्र तबाह हो जाएगी और न केवल स्वयं बल्कि अपनी सन्तान को भी तबाही (विनाश) में डालेगी।

(प्रश्न 6):आब-ए-हयात क्या है?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा के आचरण का अनुयायी होना इंसानी ज़िन्दगी के लिए अमृत है

(प्रश्न 7): इन्सानों की जिस्मानी और रुहानी ज़िन्दगी किस बात से जुड़ी है?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया इन्सानों की जिस्मानी और रूहानी ज़िन्दगी इसी बात से जुड़ी है कि वह ख़ुदा के समस्त पवित्र आचरण की पैरवी करे जो सलामती का स्रोत हैं

(प्रश्न 8):सूरत फ़ातिहा में किन क़ौमों का रद्द किया गया है

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया इस आयत से जो पवित्र क़ुरआन आरंभ किया गया, यह वास्तव में उन क़ौमों का खण्डन है जो ख़ुदा तआला के सामान्य प्रतिपालन तथा बरकत को अपनी ही क़ौम तक सीमित रखते हैं तथा अन्य क़ौमों को ऐसा समझते हैं जैसे मानो वे ख़ुदा तआला के बन्दे ही नहीं और जैसे मनो ख़ुदा ने उनको पैदा करके फिर रद्दी की भांति फेंक दिया। या उन को भूल गया है

(प्रश्न 9): हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने यहूदियों और ईसाईयों का क्या अक़ीदा वर्णन फ़रमाया?

उत्तर: हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यहूदियों और ईसाइयों का यही मत है कि सारे नबी और रसूल उन्हीं के ख़ानदान से आते रहे हैं और उन्हीं के ख़ानदान में ख़ुदा की किताबें उतरती रही है और फिर ईसाइयों की आस्थानुसार वह इल्हाम और वह्यी (ईशवाणी) का सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हो गया और ख़ुदा के इल्हाम पर मुहर लग गयी।

(प्रश्न 10): हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने आर्यों का क्या अक़ीदा बयान फ़रमाया?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया आर्य साहिबान ने भी यही धारण रख रखते हैं कि ख़ुदा की वह्यी और इल्हाम का सिलसिला आर्यवर्त की चारदीवारी से कभी बाहर नहीं गया। हमेशा इसी देश से चार ऋषि चुने जाते हैं और हमेशा वेद ही बार-बार उतरता है और हमेशा वैदिक संस्कृत ही इस इल्हाम के लिए विशिष्ट की गयी है।

(प्रश्न11):अल्लाह ताला ने यहूदीयों और ईसाईयों के अक़ीदा का रद्द किस तरह फ़रमाया?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया अत: इन आस्थाओं के खण्डन के लिए ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन को इसी आयत से प्रारंभ किया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ और उसने कई स्थानों पर पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि यह बात सही नहीं है कि किसी विशेष क़ौम या विशेष देश में ख़ुदा के नबी आते रहते हैं बल्कि ख़ुदा ने किसी क़ौम और किसी देश को भुलाया नहीं। जैसा कि वह पवित्र क़ुर्आन में एक स्थान पर फ़रमाता है وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ (फ़ातिर-25) कि कोई ऐसी क़ौम नहीं जिसमें कोई नबी या रसूल नहीं भेजा गया।

(प्रश्न 12): हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एकता की क्या बरकतें वर्णन फ़रमाईं हैं।

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया यह बात किसी से छुपी नहीं कि एकता एक ऐसी बात है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार से दूर नहीं हो सकतीं और वे संकट जो किसी उपाय से हल नहीं हो सकते वे एकता से हल हो जाती हैं। अत: एक बुद्धिमान से दूर है कि एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे।

(प्रश्न 13):हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने हिंदू और मुसलमानों को क्या नसीहत फ़रमाई?

उत्तर: हुज़ूर अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश की चिन्ता में उसका उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जो एक टहनी पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग अल्लाह तआला की कृपा से शिक्षित भी हो गए अब वैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को त्याग कर सहानुभूति धारण करना आप की बुद्धिमत्ता के यथायोग्य है। संसार के संकट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है जो बिल्कुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है। इसलिए इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी सहमति के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो इस जलती हुई आग को शीतल कर दे और प्यास के समय मरने से बचाए।

(प्रश्न 14):हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने हिंदू और मुसलमानों को आपस में सुलह करने के लिए किन शब्दों में सचेत फ़रमाया?

उत्तर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह लेखक आपको सुलह (मैत्री) के लिए बुलाता है, जबकि दोनों क़ौमों को सुलह की बहुत आवश्यकता है। संसार पर विभिन्न प्रकार की विपत्तियाँ आ रही हैं, भूकम्प आ रहे हैं, अकाल पड़ रहा है और प्लेग ने भी अभी पीछा नहीं छोड़ा और जो कुछ ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है वह भी यही है कि यदि संसार अपने बुरे कर्मों से नहीं रुकेगा और बुरे कार्यों से तोब: नहीं करेगी तो संसार पर कठोर से कठोर बालाएं आएँगी। एक विपत्ति अभी समाप्त नहीं हुई होगी कि दूसरी विपत्ति प्रकट हो जाएगी। अन्तत: मनुष्य अत्यन्त दुखी हो जाएँगे कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से संकटों के बीच में आकर पागलों की भांति हो जाएँगे। अत: हे मेरे देशवासी भाइयो! इससे पूर्व कि वे दिन आएँ होशियार हो जाओ और चाहिए कि हिन्दू एवं मुसलमानों को परस्पर सुलह कर लेनी चाहिए और जिस क़ौम में कोई ज़्यादती है जो सुलह में बाधक हो उस ज़्यादती को वह क़ौम छोड़ दे अन्यथा परस्पर दुश्मनी का सम्पूर्ण गुनाह उसी क़ौम की गर्दन पर होगा।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad